सं. 135 अक्तूबर - दिसंबर 2012 ISSN 0972-2386

कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

http://www.cmfri.org.in

विषय सूची

भारतीय मात्स्यिकी संपदाओं का हरितक पर आधारित निर्धारण	3
मुख्यालय में विश्व व्यापार समझौता और भारतीय मात्स्यिकी प्रतिमानः एक नीतिपरक दृष्टिकोण विषय पर अल्पकालीन पाठ्यक्रम	4
हरित शंबु एक्स्ट्रैक्ट (GMe) का वाणिज्यीकरण	5
समुद्री संवर्धन	7
अनुसंधान मुख्य अंश	11
संस्थान - पणधारी आपसी विनियम	13
प्रशिक्षण कार्यक्रम	16
राजभाषा कार्यान्वयन	20
प्रदर्शनी	20
मनोरंजन क्लब की कार्यविधियाँ	21
कृ वि कें समाचार	23
कार्यक्रम में सहभागिता	24
प्रकाशन	25
कार्मिक समाचार	26

हरित शंबु एक्स्ट्रैक्ट (GMe) का वाणिज्यीकरण

पृष्ठ 5

कडलमीन IV - तीन सदियों से लेकर अनुसंधान कार्यों में लगातार सहायता

अंतिम आवरण पृष्ठ देखें

हर कदम, हर डगर किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

भाकृ अनुप
ICAR

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पी.बी.सं.1603, एरणाकुलम नोर्त पी. ओ. कोचीन - 682 018

कडलमीन TM
cadalmin

प्रकाशक

डॉ. जी. सैदा रावु
निदेशक
केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पोस्ट बोक्स सं.1603, एरणाकुलम नोर्त पी.ओ
कोचीन - 682 018, केरल, भारत
दूरभाष : 0484-2394867
फैक्स: 91-484-2394909
ई-मैल: mdcmfri@md2.vsnl.net.in
वेबसाइट: www.cmfri.org.in

संपादकीय मंडल

डॉ. आर. सत्यदास, अध्यक्ष
डॉ. आर. नारायणकुमार
डॉ. सी. रामचन्द्रन
जे. नारायणस्वामी

संपादक

वी. एड्विन जोसफ

सचिवीय सहायता

पी. आर. अभिलाष

हिंदी अनुवाद

ई. के. उमा

सी एम एफ आर आइ के बारे में

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीन स्थापित केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन समुद्री मात्स्यिकी और समुद्र कृषि में अनुसंधान और प्रशिक्षण के लिए समर्पित सर्वप्रमुख अनुसंधान संस्थान है।

सी एम एफ आर आइ के तीन क्षेत्रीय केंद्र याने कि मंडपम कैंप, विशाखपट्टणम और वेरावल तथा सात अनुसंधान केंद्र भारत की तट रेखा में कार्यरत हैं जो देश के समुद्रवर्ती राज्यों को समुद्री मात्स्यिकी नीति का अनुपालन करने में सहायता प्रदान करते हैं।

निदेशक कहते हैं

प्रिय सहकर्मियो

सी एम एफ आर आइ के इतिहास में घटनापूर्ण एक और वर्ष 2012 गुज़र जाता है.

मुडकर देखने पर, अत्यंत गर्व से हम कह सकते हैं कि वर्ष के दौरान समुद्री मात्स्यिकी सेक्टर में हम ने कई उपलब्धियाँ हासिल की हैं जिन में "भारत और आस्ट्रेलिया में समुद्री आवास व्यवस्था पर जलवायु परिवर्तन की तैयारी" विषय पर अंतर महाद्वीपीय परियोजना के रूपायन के लिए टासमानिया विश्वविद्यालय के साथ अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता प्रयास सब से प्रमुख है. सी एम एफ आर आइ का उत्पाद 100% शाकाहारी न्यूट्रास्यूटिकल कडलमीन™ GAe का मार्च महीने में लोकार्पण किया गया. इस का उपयोग करने से शरीर पर बुरा प्रभाव नहीं होता है और देश में जोडों के दर्द व आर्थ्रैटिस रोग से ग्रसित मरीजों को दर्द रोकने में यह दवा बहुत ही कारगर सिद्ध हुई है.

समाज के गरीबों और दलित लोगों को मदद करने के हमारे प्रयास के रूप में ट्राइबल सब प्लान (टी एस पी) घटक के अंदर सितंबर महीने में गुजरात के 'सिदी' आदिवासी जनजातियों को पिंजरा मछली पालन के लिए वित्तीय और तकनीकी सहायताएं प्रदान की गयी. हमारे कडलमीन™ हरित शंबु एक्स्ट्रैक्ट (GAe) का अक्तूबर महीने में अमाल्गम सी फुड्स, कोच्ची की नियंत्रित कंपनी द्वारा वाणिज्यीकरण किया गया. इस से समुद्र से और भी उपयोगी उत्पाद विकसित करने के लिए प्रेरणा मिल जाएगी. महासागरीय अनुसंधान अध्ययन और भी प्रबल बनाने के उद्देश्य से इस योजना अवधि के दौरान हमें दो मात्स्यिकी अनुसंधान पोत मिल रहे हैं, जिन का 'कील' डालने का कार्य सितंबर महीने में हुआ. देश के चुने गए स्थानों में मछुआरों के खेतों में कोबिया और पोम्पानो मछलियों का बडे पैमाने में पालन करने का सफलता पूर्वक निदर्शन किया जा सका.

ये सब टिकाऊ समुद्री मात्स्यिकी उत्पादन में उपलब्धि प्राप्त करने के लिए किए गए हमारे वचनबद्ध और अर्पणशील प्रयासों की वजह से हो पाया. इस तरह की उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए सारे सी एम एफ आर आइ टीम सराहना के पात्र हैं. अधिक ऊँचाई तक पहुँचना प्रमुख बात है लेकिन प्रतिबंधों को पारकर उन्नति प्राप्त करना और भी प्रमुख बात है. यह मानते हुए आगे भी हमें इस तरह की उपलाब्धि की प्राप्ति के लिए कर्मठ होना आवश्यक है.

सब को संतोषजनक और समृद्धिपूर्ण नव वर्ष 2013 की शुभकामनाएं अदा करते हुए

डॉ. जी. सैदा रावू
निदेशक

भारतीय मात्स्यिकी संपदाओं का हरितक पर आधारित निर्धारण

सी एम एफ आर आइ का अनुसंधान पहल

भारतीय मात्स्यिकी पिछले दशकों के दौरान मत्स्यन प्रयासों की अनियमितताओं और अन्य घटकों की वजह से उछाल की प्रवणता पर थी और इस में नए परिवेशों के विघटित विश्लेषणों के बावजूद वृद्धि भी दिखायी पडी. संग्रहण करने की नीति का सही समय पर निर्धारण और भविष्य में फसल की उपलब्धता के पूर्वानुमान के लिए उपयुक्त तकनीकों को निर्धारित करना योजनाकारों और अनुसंधान क्षेत्र के नीतिकारों के आगे की सब से प्रमुख चुनौती है. सी एम एफ आर आइ अपने अंतर्राष्ट्रीय तौर पर प्रशंसित नमूना रूपायन तरीके से देश के महाद्वीपीय क्षेत्रों में पकडी गयी समुद्री मात्स्यिकी संपदाओं का समय पर आंकडे प्रदान करता रहता है और भारत सरकार तथा एफ ए ओ जैसे एजेन्सियों द्वारा इन आंकडों का उपयोग किया जाता है. समुद्री संपदा की शक्यता का पुनर्वैध करने के लिए किए गए पिछले प्रयास अवतरण की समय श्रेणी पर आधारित थे. लेकिन समूचे क्षेत्रों की संपदाओं के मापन को आधार बनाकर शक्यता का निर्धारण करने पर बेहत्तर आंकडे उपलब्ध किए जा सकेंगे.

प्राथमिक उत्पादकता, जो अनन्य आर्थिक मेखला के विभिन्न भागों में हरितक की सांद्रता के द्वारा संकेत किया जाता है, संपदा समृद्धि के अत्यधिक निर्भर करने योग्य घटक है क्योंकि ये, सांद्रता का द्रुत संकेतक होने के उपरांत समुद्री मात्स्यिकी संपदाओं के अस्तित्व और प्रचुरोद्भवन के प्राथमिक कडी है. उन्नीस सौ पचास के अंतिम और साठ के शुरू के वर्षों के दौरान सी एम एफ आर आइ द्वारा भारत की समुद्री संपदाओं के जैविक उत्पादन पर आधारित निर्धारण करने का प्रयास किया गया. उन दिनों में प्रचलित कार्य प्रणालियाँ जैसे ऑक्सिजन और C 14 तरीकों से उपलब्ध सीमित संपदाओं का उपयोग करके सी एम एफ आर आइ के वैज्ञानिकों द्वारा कार्बन उत्पादन को आकलित करने का प्रयास किया और यह भौगोलिक रूप से स्वीकृत और स्थानीय रूप से सुसंगत हो गया. उन प्रयासों से भारतीय महासागर क्षेत्र में उत्पादन की संभावनाएं 39 से 40 मिलियन टन और भारतीय भूभाग के लिए 40% आरोपण करने लायक आकलित किया गया. यह सब कहीं प्रचलित विदोहन के स्तर के अनुसार संग्रहण योग्य शक्यता का 11 मिलियन टन था. इस तरह के प्रमुख कार्यों से संपदा शक्यता के निर्धारण में विभिन्न प्रकार का परिवेश मिल गया लेकिन जैविक उत्पादकता के निर्धारण द्वारा इस में गंभीर रूप से बाधा आयी. लेकिन हाल ही में ऑप्टिकल डेटा को प्रासंगिक प्राचलों तक परिवर्तित करने के लिए दूरसंवेदन औज़ारों और लॉगरितम के प्रयोग से समूचा परिवेश बदल गया. विशाल समुद्रों में उपग्रह चालित ओ सी एम सेंसरों को उपयुक्त करके हरितक की सांद्रता आंकी गयी. इस तरह के उपाय और निकाले गए मात्स्यिकी शक्यता निर्धारण अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (एस ए सी), अहमदबाद द्वारा दीर्घकाल तक मानकीकृत किया गया.

हाल ही के प्रौद्योगिकीय प्रगतियों से संकेत लेते हुए और अतीत में किए गए लाभदायक अनुसंधान कार्यों को तलाशते हुए सी एम एफ आर आइ ने बेहत्तर दूरसंवेदन सूचनाएं बनाने का प्रयास किया. पूरे भारतीय तट पर फैले हुए संस्थान के विभिन्न केंद्रों में मौजूद अवसंरचनाओं से समुद्री मात्स्यिकी संपदाओं और संग्रहण करने योग्य शक्यता के निर्धारण एवं पूर्वानुमान के लिए उचित प्रकार की रूपावली तैयार करने के प्रयास किए जा रहे हैं. ओ सी एम से संवेदित सूचनाओ द्वारा प्रदान किए गए हरितक आंकडों और नितलस्थ जीवों, जिन में द्वितीय उत्पादकों और बडे जीवों पर प्राप्त आंकडों के अध्ययन के आधार पर प्राप्त भूरे आंकडों का पांच वर्ष की अवधि के दौरान अनन्य आर्थिक मेखला के विभिन्न क्षेत्रों में साउन्ड सी-ट्रूथिंग से स्थानिक एवं मौसमिक आधार पर प्रतिमान तैयार करने की योजना बनायी गयी है. इस तरह के बृहद् कार्य अमल में लाने के लिए अधिदेशित संगठनों की सहकारिता आवश्यक है और सी एम एफ आर आइ ने एस ए सी और एफ एस आइ के संयुक्त सहयोग से इस दिशा में बेहत्तर परिणाम प्राप्त करने के लिए संयुक्त अनुसंधान कार्य शुरू किया है. वर्ष 2012-13 से लेकर तीन वर्षों में प्रथम पहलू के अंत में इस कदम के हाइब्रिड मॉडलिंग मोड्यूल का अंतिम रूप दिया जाएगा. इन प्रतिमानों के परिणाम का पुनर्वैध करने के पश्चात, देश के विभिन्न भागों की विभिन्न संपदाओं के बाज़ार परिवेश और गतिशील फ्लीट क्षमता उपलब्धता के आधार पर बाइकनोमिक सबसिडियरी मॉडलों का विकास किया जाएगा, जिस से एक वर्ष में विभिन्न मौसम से प्राप्त पकड पर वास्तविक तौर पर पूर्वानुमान किया जा सकेगा.

परियोजना के संबंध में 17-18 अक्तूबर 2012 के दौरान सी एम एफ आर आइ, कोचीन में क्लोरोफिल बेस्ड रिमोट सेन्सिंग असिस्टड इन्डियन फिशरीस फोरकास्टिंग सिस्टम (Chlo RIFFS) विषय पर कार्यशाला आयोजित की गयी, जिस में एफ एस आइ और एस ए एस से विशेषज्ञों ने भाग लिया. कार्यशाला के सत्रों में परियोजना की समग्र कार्ययोजना और रूपरेखा पर विस्तृत रूप से चर्चा की गयी. सहवर्ती संस्थाओं की क्षमता और भविष्य के उद्यमों की उपलब्धियाँ प्राप्त करने के लिए स्वीकार करने वाले अभिगम पर ध्यान दिया गया. विचार-विमर्श के दौरान दूरसंवेदित आंकडों के स्पष्टीकरण के लिए स्वीकार किए गए विद्यमान आलगरितम और *स्व-स्थाने* मूल्यांकन के लिए उपलब्ध सुविधाओं और अधिक ध्यान आवश्यक क्षेत्रों की तुलना में मान्यकरण और सी ट्रूथिंग पर विस्तृत रूप से निर्धारण किया गया. इन प्रारंभिक कदमों पर दो विदेशी अनुसंधान संस्थाओं का ध्यान आकृष्ट हुआ और उन्होंने प्रतिमान विकास के कार्यकलाप में सहयोग देने की अभिरुचि प्रकट की. सी एम एफ आर आइ भारतीय समुद्री मात्स्यिकी प्रबंधन सशक्त बनाने के लिए पर्णहरित नामक अत्यंत वास्तविक घटक द्वारा समुद्री मात्स्यिकी संपदाओं का पूर्वानुमान करने के लिए सम्मिलित प्रयास में लगे हुए हैं.

(जे.जयशंकर, वरिष्ठ वैज्ञानिक, एफ आर ए डी की रिपोर्ट)

निदेशक, सी एम एफ आर आइ उद्घाटन भाषण देते हुए

मुख्यालय में "विश्व व्यापार समझौता और भारतीय मात्स्यिकी प्रतिमानः एक नीति परक दृष्टिकोण" विषय पर लघु पाठ्यक्रम

सी एम एफ आर आइ मुख्यालय में 17-26 सितंबर 2012 के दौरान भा कृ अनु प की निधिबद्ध परियोजना "विश्व व्यापार समझौता और भारतीय मात्स्यिकी रूपावलीः एक नीति परक दृष्टिकोण" पर लघु पाठ्यक्रम आयोजित किया गया. डॉ.श्याम एस.सलिम पाठ्यक्रम निदेशक और डॉ.आर.नारायणकुमार पाठ्यक्रम समायोजक थे. डॉ.सी.रामचन्द्रन, डॉ.विपिनकुमार वी.पी., डॉ.एन.अश्वती कार्यशाला के समायोजक थे. देश के विभिन्न भागों से कुल 25 प्रतिनिधियों ने पाठ्यक्रम में भाग लिया.

सहभागियों का दृश्य

सी एम एफ आर आइ के नए अनुसंधान पोत के लिए कील लगाने का कार्यक्रम

निदेशक, सी एम एफ आर आइ कार्मिकों के साथ

डॉ.जी.सैदा राव, निदेशक ने डॉ.के.के.फिलिप्पोस, प्रभारी वैज्ञानिक, कारवार, डॉ.जी.गोपकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक, मंडपम क्षेत्रीय केंद्र के साथ गोवा शिपयार्ड लिमिटड, गोवा में नए अनुसंधान पोत के लिए कील लगाने के कार्यक्रम में भाग लिया. दिनांक 07.12.2012 को निदेशक ने अनुसंधान पोत का कील लगाया. शिपयार्ड के कार्मिकों ने निदेशक और वैज्ञानिकों को शिपयार्ड के प्रमुख कार्यकलापों को दिखाया और इन पर विवरण दिया.

हरित शंबु एक्स्ट्रैक्ट (GMe) का वाणिज्यीकरण

भा कृ अनु प के एक संस्थान द्वारा उत्पादित प्रथम न्यूट्रास्यूटिकल

हरित शंबु एक्स्ट्रैक्ट (कडलमीन™ GMe) में हरित शंबु *पेर्ना विरिडिस* (भारतीय पेटेन्ट आवेदन सं. २०६५-२०६६/CHE/२०१०) से निचोड किए गए 100% प्राकृतिक समुद्री जैवसक्रिय सूजनरोधी संघटक होते हैं. मानव में आर्थ्रैटिक दर्द और सूजन संबंधी रोगों को रोकने में यह अत्यंत प्रभावकारी उत्पाद है और बाज़ार में उपलब्ध नोन-स्टीरोइडल सूजन रोधी दवाओं और अन्य कृत्रिम उत्पादों के प्रति बेहत्तर विकल्प भी है. कडलमीन™ GMe लेने से इन कृत्रिम नोन-स्टीरोइडल सूजनरोधी दवाओं (एन एस ए आइ डी) से होने वाले बुरे प्रभाव का असर नहीं होगा. *पी.विरिडिस* से विलगन किए गए कडलमीन™ GMe सक्रिय तत्व एक इनफ्लमेटरी और ओक्सिडेटीव स्ट्रेस प्रतिक्रिया में सूजनरोधी साइक्लोओक्सिजनेसस - II (COX II) और लिपोक्सिजनेस- V (LOX V) रोक देता है जिस के फलस्वरूप प्रो-इनफ्लमेटरी प्रोस्टाग्लान्डिन्स और ल्यूको ट्रिएन्स का उत्पादन कम होता है और इस की सक्रियता बाज़ार में उपलब्ध कृत्रिम नोन-स्टीरोइडल सूजनरोधी दवाओं से बेहत्तर देखी गयी. *पी.विरिडिस* से विलगित और उत्पाद में सकेंद्रित सक्रिय तत्व में एस्पिरिन और इन्डोमेथासिन जैसे कृत्रिम एन एस ए आइ डी (५५-६६%) की अपेक्षा उत्तेजक COX II और LOX V रोधन (७०-७५%) तुलनात्मक मात्रा में देखा गया. जीवों में किए गए नमूना अध्ययन से यह व्यक्त हुआ है कि सक्रिय तत्व हिस्टामिन द्वारा उत्पादित जलांश को दबाया गया (६४-७७%, २-४h). इस से यह व्यक्त होता है कि ये संश्लेषण को दबाते हुए या सूजन मीडिएटरों द्वारा सूजनरोधी कार्य दिखाते हैं.

सी एम एफ आर आइ द्वारा विकसित हरित शंबु एक्स्ट्रैक्ट (कडलमीन™ GMe) का दिनांक 5 अक्तूबर 2012 को एक्सिलरेटड फ्रीज़ ड्राइंग कंपनी,

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का

कडलमीन™ हरित शंबु एक्स्ट्रैक्ट (GMe) का

प्रकृति से एक संपूर्ण स्वास्थ्य समाधान

हरित शंबू से निचोडकर उत्पादित

कृत्रिम नोन स्टीरोइडल सूजन रोधी दवाओं का प्रभावकारी

विकल्प १००%

प्राकृतिक, समुद्री,जैवसक्रिय सूजनरोधी संघटक

प्राइवेट लिमिटड, जो अमाल्गम ग्रुप ऑफ कंपनी के अंदर आने वाली एफ डी ए, आइ एस ओ 22000 एफ एस एस सी प्रमाणित फ्लैग शिप कंपनी है के साथ वाणिज्यिकरण किया गया. यह भ कृ अनु प के किसी एक संस्थान द्वारा उत्पादित प्रथम न्यूट्रास्यूटिकल है. डॉ. ए.जे.तरकन, अध्यक्ष, एक्सिलरेटड फ्रीज़ ड्राइंग कंपनी, प्राइवेट लिमिटड और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की ओर से डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक, केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा समझौता ज्ञापन में हस्ताक्षर किया गया.

डॉ.सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ और डॉ.तरकन, अध्यक्ष, ए एफ डी सी लिमिटड समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करते हुए. डॉ.विजयकुमारन, महानिदेशक, एफ एस आइ भी उपस्थित है

जी एम ई में सक्रिय संघटकों को पहचानने और इनको उच्च सक्रियता में केंद्रित करने के तकनीक मौजूद हैं. इस क्षमता को इस उत्पाद को विकसित करने के लिए स्वीकृत अनोखा जैवरासायनिक इंजिनीयरिंग कार्यप्रणाली से विषाक्तता के बिना सक्रिय रखा गया है. इस उत्पाद को ऐसे विशिष्ट तरीके से विकसित किया गया है कि वायु, नमी, तापमान और प्रकाश से इसकी क्षमता का अवक्रमण नहीं होगा और सक्रियता बढ़ाया जाएगा. यह उत्पाद हानिकारक कारसिनोजेनिक *ट्रान्स* फैटी आसिडों, राडिकल्स/ राडिकल अड्डक्ट, लो मोलिक्युलार वेइट कार्बनाइल काम्पाउन्डों से मुक्त है.

यह उत्पाद एक्सिलरेटड फ्रीज़ ड्राइंग कंपनी, प्राइवेट लिमिटड द्वारा अपने ब्रेन्ड के नाम में वाणिज्यिक रूप से बनाया जाएगा. कडलमीन™ GMe का वाणिज्यीकरण समुद्री संवर्धन उद्योग और मछुआरा लोगों के लिए महत्वपूर्ण बात है क्योंकि इस से भारत के पश्चिम तटों में हरित शंबू के उत्पादन की मांग बढ़ जाएगी. इस उत्पाद के घरेलू उपयोग और निर्यात करने के उद्देश्य से कंपनी ने लगभग 100 मिलियन कैप्स्यूल का उत्पादन करने की योजना बनायी है.

कडलमीन™ GMe की तीव्र विषाक्तता पर अध्ययन और मृत्युकारक मात्रा और विभिन्न प्राचलों के प्रभाव समझने के लिए वयस्क विस्टार चूहे में किए गए परीक्षण से यह संकेत मिला कि कडलमीन™ GMe (शरीर भार का 4.0 ग्रा./कि.ग्रा.) परीक्षणात्मक रूप से (नर और मादा को) देने पर चूहों के आहार लेने में, पानी पीने में और शरीर भार में कोई परिवर्तन नहीं दिखाया पडा. इस से यह व्यक्त है कि कडलमीन™ GMe देने से इन जीवों में कोई असर नहीं हुआ है. इस से यकृतीय या वृक्कीय क्रियाकलापों में कोई जैवरासायनिक परिवर्तन भी नहीं दिखाया पडा. यह उत्पाद देने से रुधिर संबंधी प्राचलों जैसे डब्लियू बी सी, आर बी सी, प्लेटलेट, हीमोग्लोबिन और जीव के शरीर भार में कमी या शरीर के अंगों के भार में कमी महसूस नहीं हुआ. परीक्षण किए गए जीवों की शव परीक्षा करने पर शरीर के सारे ऊतक सामान्य स्थिति में ही दिखाए पडे. विषाक्तता पर दीर्घकालीन अध्ययन करने से यह मालूम पडा कि चूहों के आहार और पानी के उपभोग और शरीर भार में कोई परिवर्तन नहीं है, जिस से यह व्यक्त है कि कडलमीन™ GMe देने से इन जीवों में विषाक्तता का कोई प्रभाव नहीं हुआ है. इस से यकृतीय या वृक्कीय क्रियाकलापों में कोई जैवरासायनिक परिवर्तन भी नहीं दिखाया पडा. उत्पाद का परीक्षण करने पर कोलस्ट्रोल, एच डी एल-कोलस्ट्रोल, एल डी एल कोलस्ट्रोल और ट्राइग्लिसराइड स्तर जैसे लिपिड प्रोफाइल भी परिवर्तन रहित देखे गए.

(काजल चक्रबर्ती, प्रभारी वैज्ञानिक, आइ टी एम यू की रिपोर्ट)

हस्ताक्षर किए गए समझौता देने का दृश्य

पिंजरा समुद्री संवर्धन दत्तक ग्रहण मानचित्र में तृश्शूर और कोल्लम जिलाएं

डॉ.सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ कय्पमंगलम के मछुआरों को *एम. सेफालस* के संतति प्रदान करते हुए

एरणाकुलम जिला के पूयप्पिल्ली में पिंजरा मछली पालन के सफलतापूर्वक निदर्शन करने से यह साबित किया गया कि भू रहित मछुआरों को खुले जलाशय में पिंजरा मछली पालन करना लाभदायक है. इस से प्रभावित होकर केरल के अन्य जिलाओं के मछुआरे अपने स्थानों में मछली संवर्धन कार्यक्रम शुरू करने की अभिरुचि से आगे आए. तृश्शूर जिला में अक्तूबर, 2012 महीने में स्थान का सर्वेक्षण करने के बाद जिला के कयप्पमंगलम में निदर्शन पिंजरा स्थापित करने का निर्णय लिया गया. इस उद्यम के ग्रुप को उनकी आजीविका की पृष्ठभूमि, वित्तीय स्थिति और एक नई प्रौद्योगिकी स्वीकारने की अभिरुचि के आधार पर पहचाना गया. कयप्पमंगलम कोचीन से लगभग 65 कि.मी. दूर है और यहाँ पिंजरा मछली पालन करने योग्य विशाल खुला जलाशय है. इस के अतिरिक्त कोचीन से रोड या जल मार्ग पहुँचने की सुविधा भी है.

इस स्थान में 1 दिसंबर, 2012 को ६मी. व्यास के एच डी पी ई से निर्मित पिंजरा स्थापित किया गया. तृश्शूर जिला पंचायत के अध्यक्ष ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया. निदेशक, सी एम एफ आर आइ ने पिंजरे में प्राथमिक संभरण करने के लिए *मुजिल सेफालस* के 2000 और *एट्रोप्लस सुराटेन्सिस* के 1000 संततियों को सौंपा दिया. कार्यक्रम में स्थानीय पंचायत के अध्यक्ष, पंचायत के सदस्य और सी एम एफ आर आइ, कोचीन के समुद्री संवर्धन प्रभाग के वैज्ञानिक गण उपस्थित थे.

(इमेल्डा जोसफ, वरिष्ठ वैज्ञानिक, समुद्री संवर्धन प्रभाग, कोचीन की रिपोर्ट)

श्री के.वी.दासन, अध्यक्ष, जिला पंचायत, तृश्शूर कयप्पमंगलम में पिंजरे के जलायन का उद्घाटन करते हुए

श्री के.वी.दासन, अध्यक्ष, जिला पंचायत, तृश्शूर द्वारा मछली संततियों को पिंजरे में डालने का दृश्य

शुक्ति पालन के नए क्षेत्र

चेराय के प्रशिक्षणार्थी गण मूत्तकुन्नम के शुक्ति पालन खेत का मुआइना करते हुए

एरणाकुलम के सबसे सुन्दर पर्यटन स्थान चेराय के कुडुम्बश्री के दो ग्रुप द्वारा शुक्ति पालन कार्य शुरू किया गया. पालन कार्यविधियों के प्रारंभ के रूप में मोलस्कन मात्स्यिकी प्रभाग ने दो प्रशिक्षण कार्यक्रम (25 प्रशिक्षणार्थियों के लिए) आयोजित किए और टीम के सदस्यों ने दिसंबर, 2012 के दौरान मूत्तकुन्नम के शुक्ति पालन खेत और निर्मलीकरण सुविधाओं का मुआइना किया.

कोल्लम के अष्टमुडी में पिंजरे का जलायन

पखमछलियों विशेषतः पेर्ल स्पोट के पालन के लिए कोल्लम के अष्टमुडी झील के पेरुमण में दिनांक 15 अक्तूबर 2012 को 3x3 मी. व्यास के जी आइ से निर्मित पिंजरे का जलायन किया गया. श्री आर.राजशेखरन, पंचायत अध्यक्ष, पनयम पंचायत जलयान कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे. श्री आर.अनिल कुमार, वार्ड सदस्य, पनयम पंचायत विसार-जेनरल ऑफ कोल्लम डयोसस और निदेशक, कोल्लम समाज सेवा संघ भी कार्यक्रम में उपस्थित थे. पंचायत के अध्यक्ष ने आमदनी के विकल्प स्रोत के रूप में पिंजरा मछली पालन के इस उद्यम को शुरू करने के लिए ग्रुप के सदस्यों का अभिनन्दन किया क्योंकि इस से उसी क्षेत्र में मछली उत्पादन और भी बढ़ जाएगा. उन्होंने यह भी बताया कि अष्टमुडी झील की पेर्ल स्पोट मछली इस के अच्छे स्वाद की वजह से बडी मांग की है और बाज़ार में इसका अच्छा भाव भी मिलता है. कोल्लम डयोसस के फादर विसार जेनरल ने जलायन करने से पहले पिंजरों का आशीर्वाद किया और निदेशक, क्यू एस एस के साथ उन्होंने पिंजरे में मछली संततियों के पहले बैच का संभरण किया. पेरुमण में स्थापित पिंजरों का अनुरक्षण कोइलोन समाज कल्याण संघ के अंदर कार्यरत सेन्ट अल्फोन्सा स्वयं सहायक संघ द्वारा किया जाता है. इस ग्रुप के अंदर अष्टमुडी झील में मत्स्यन करने वाले वाल 10 सक्रिय सदस्य हैं. ग्रुप ने प्राकृतिक स्थानों से पेर्ल स्पोट के संततियों का संग्रहण करके पिंजरों में संभरित किया. मछलियों को आहार देना और पिंजरों का अनुरक्षण कार्य ग्रुप के सदस्यों द्वारा किया जाता है. 1.5 के ग्रेड बी के जी आइ पाइप उपयुक्त करके पिंजरा सजाया गया. एच डी पी ई के आंतरिक जाल की जालाक्षि का आकार 16 मि.मी. और बाहरी जाल की जालाक्षि का आकार 24 मि.मी. है. हर एक पिंजरे में पेर्ल स्पोट के लगभग 2000 किशोरों का संभरण किया गया. आहार के रूप में वाणिज्यिक पेलेट खाद्य दिया जाता है और दिन में दो बार आहार दिया जाता है.

(बोबी इग्नेशियस, समुद्री संवर्धन प्रभाग, कोचीन की रिपोर्ट)

कोल्लम में चतुष्कोणीय आकार का जी आइ पिंजरा जलायन के लिए तैयार

कोल्लम में जलायन से पहले पिंजरे के आशीर्वाद का दृश्य

कोल्लम के अष्टमुडी में स्थापित पिंजरों का दृश्य

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में कोबिया मछली का आठवां सफलतापूर्वक प्रजनन और डिंभक उत्पादन

कोबिया मछली के सात सफलतापूर्वक प्रजनन के बाद सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में 30 अक्तूबर 2012 को आठवां प्रजनन और अंडजनन सफल रूप से हो पाया. इस के लिए उपयुक्त किए गए नर मछलियों का भार क्रमशः 26 कि.ग्रा. और 23 कि.ग्रा. और मादा मछली का भार लगभग 24 कि.ग्रा. था. कोबिया में 28 अक्तूबर, 2012 को होर्मोन लगाया गया. दिनांक 29 अक्तूबर, 2012 के बडे सबेरे में अंडजनन हुआ. अंडजनन में कुल 3.5 लाख अंड आकलित किए गए और इन में 57 प्रतिशत अंडों का निषेचन हुआ. कम तापमान की वजह से भ्रूण विकास में रुकावट हुआ और इस लिए स्फुटन का प्रातिशत कम हो गया. नए स्फुटित डिंभकों का पालन हरा पानी और पर्याप्त आहार होने वाले टैंकों में किया गया. दिनांक 14.12.2012 को डिंभक ने 45 दिन की आयु और 11.2 से.मी. की औसत लंबाई प्राप्त की.

कोबिया के अंगुलिमीनों का मापन

टैंक में कोबिया के अंगुलिमीनों का दृश्य

मंडपम में कोबिया और पोम्पानो मछलियों का पिंजरा पालन

मछलियें को आधर देने का दृश्य

भारत में पहली बार सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में वर्ष 2010-2011 के दौरान कोबिया (*राचिसेन्ट्रोन कनाडम*) और पोम्पानो (*ट्रकिनोटस ब्लोची*) के स्फुटनशाला में उत्पादित अंगुलिमीनों का पिंजरे में पालन शुरू किया गया. प्राथमिक रूप से किए गए कुछ परीक्षणों के बाद अंगुलिमीनों का नर्सरी पालन करने के पश्चात अगस्त-सितंबर 2012 के दौरान उन्हें पिंजरे में संभरित किया गया. पालन के लिए सात पिंजरे और अंडशावक विकास के लिए दो पिंजरे भी उपयुक्त किए गए. इसके अतिरिक्त रामनाथपुरम के मरकायरपट्टिणम गाँव के स्वयं सहायक संघ और एक निजी उद्यमी की सहभागिता से तीन पिंजरों में कोबिया मछली का पालन किया जाता है.

(जी.गोपकुमार, ए.के.अब्दुल नाज़र, आर.जयकुमार, जी.तमिलमणी, एम.शक्तिवेल, सी.कालिदास, पी.रमेश कुमार और जोनसन बी., मंडपम क्षेत्रीय केंद्र की रिपोर्ट)

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र का समुद्री पिंजरा मछली पालन स्थान

कोबिया ओर पोम्पानो मछलियों का अंडशावक विकास

पहले ही F_1 पीढि से कोबिया मछली के अंडशावक का विकास किया जा चुका और अंडजनन परीक्षण किए जा रहे हैं आगे भी कोबिया और पोम्पानो मछलियों की F_1 पीढि अंडशावक विकास के लिए पिंजरों में बढाया जा रहा है। लगभाग एक किलोग्राम भार वाली 300 और छः किलोग्राम भार वाली 16 कोबिया मछलियों का अंडशावक विकास के लिए पिंजरों में पालन किया जा रहा है। लगभग 840 ग्राम औसत भार वाली 600 (स्फुटनशाला में उत्पादित) और 920 ग्राम औसत भार वाली 300 कोबिया मछलियों (प्राकृति रूप से संग्रहित) का अंडशावक विकास के लिए पिंजरे में पालन किया जा रहा है।

एफ 1 पीढ़ि की 6 कि.ग्रा. भार वाली कोबिया मछली

एफ 1 पीढ़ि की 27 कि.ग्रा. के औसत भार वाली अंडशावक

एक कि.ग्रा. से अधिक भार वाली पोम्पानो मछली

गुजरात के 'सिदी' आदिवासियों के लिए वेरावल के समुद्र में सी एम एफ आर आइ द्वारा समुद्री मछली पालन पिंजरा खेत की स्थापना

संस्थान के ट्राइबल सब प्लान आउटलेट 2012-13 के अंदर गुजरात के प्रिमिटीव ट्राइबल ग्रुप 'सिदी' को उनके आजीविका विकास कार्यक्रम के रूप में सी एम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केंद्र द्वारा वेरावल समुद्र में समुद्री मछली पिंजरा पालन खेत स्थापित किया गया. जी आइ पाइप से बनाए गए 5 मी. के व्यास और वृत्ताकार के 20 पिंजरे से युक्त यह पालन खेत सी एम एफ आर आइ द्वारा वर्ष 2007 से लेकर स्थापित पालन स्थानों में सब से बडा है. पिंजरों को अलग अलग रूप से SS श्रृंखला से बनाए एकल लंगर, जो रिवर स्टोन भरे गए कोम्बिनेशन रोप गाबियोन से जोडा गया है, से लंगर कर दिया है. लंगरों का परिनियोजन जे सी बी क्रैन उपयुक्त करके स्थापित बार्ज से किया गया. यह मछली पालन स्थान मराइन पुलिस स्टेशन, पटान, वेरावल के पास और समुद्र तट से लगभग आधा किलोमीटर और वेरावल मत्स्यन पोताश्रय से एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. जुनगढ़ जिला के 'सिदी' आदिवासियों के पंजीकृत संघ भारत आदिमजुत मंडली, तलाला के सहयोग से यह कार्यक्रम आयोजित किया गया. इस संघ के सदस्य, जिन्होंने सी एम एफ आर आइ द्वारा पिंजरा मछली पालन में प्रशिक्षण प्राप्त किया है, अब वेरावल क्षेत्रीय केंद्र के वैज्ञानिकों के निरीक्षण के अंदर पालन खेत की कार्यविधियों में लगे हुए हैं. गुजरात के विभिन्न तटीय गाँवों जैसे सौराष्ट्र तट के भावनगर और अमरेली जिलाओं, जहाँ अंतराज्वारीय क्षेत्रों में मुख्यतः उपयुक्त 'वाडा' नामक गिलजाल में उप पकड के रूप में प्राप्त लगभग 70 ग्रा. भार वाले कीचड शूली महाचिंगट *पानुलिरस पोलीफागस* के किशोरों को पालन खेत के पिंजरों में संभरित किया गया. वेरावल में परिचालन किए जाने वाले नितलस्थ आनायों में उप पकड के रूप में प्राप्त किशोर महाचिंगटों को भी निर्यात योग्य आकार याने कि 150 ग्रा. शरीर भार प्राप्त करने तक पालन पिंजरों में संभरित किया जाता है. कुछ पिंजरों में सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र की समुद्री मछली स्फुटनशाला द्वारा दिए गए कोबिया मछली और कुछ पिंजरों में दियु और सूत्रपादा के संकरी खाडियों से संग्रहित ग्रे मल्लट *मुजिल सेफालस* संभरित की गयीं. 'सिदी' आदिवासियों के समुद्री मछली पालन कार्यों में होने वाली अभिरुचि और पिंजरे सजाने से लेकर जाल बांधना, जाल की मरम्मत, लंगर लगाना, पिंजरे का जलायन, प्रबंधन आदि समुद्री पिंजरा मछली पालन के सभी पहलुओं में उनके लगन गुजरात में समुद्री पिंजरा मछली पालन प्रौद्योगिकी लोकप्रिय बनाने के साथ साथ इन प्राचीन आदिवासी लोगों को समाज के प्रमुख समुदाय के रूप में बढ़ाए जाने और राज्य में उनका सामाजिक स्तर ऊँचा करने में सहायक निकलेगा.

पिंजरा सजाने का दृश्य

(के.मोहम्मद कोया, श्रीनाथ के.आर., ज्ञानरंजन दास, स्वातिप्रियंका सेन, वैज्ञानिक गण और सुरेश कुमार मोज्जादा, तकनीकी अधिकारी (टी-६) की रिपोर्ट)

पिंजरे में मछलियों को खाद्य देने का दृश्य

पिंजरे में शूली महाचिंगट के किशोरों का संभरण

समुद्री शंबुक का स्फुटनशाला उत्पादन

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र की समुद्री संवर्धन स्फुटनशाला में आंध्रा प्रदेश के काकिनाडा उपसागर से संग्रहित *हेमीफ्यूसस प्यूगिलिनस* का अंडजनन किया जा सका. लगभग 80.13 मि.मी. कवच की ऊँचाई, 41.39 मि.मी. कवच की चौडाई और 53.04 ग्रा. भार वाली मादा शंबुक ने दिनांक 16 अक्तूबर 2012 को 35 अंडसंपुटों की एक श्रृंखला के रूप में अंडजनन किया. सारे अंडसंपुटों को एक कुंडी द्वारा बांधा गया था. संपुट के अंदर ही अंड का विकास हुआ और निषेचन के 28 से 30वां दिन छोटे शंबुक बाहर आए. कुल 35 संपुटों से लगभग 2500 छोटे शंबुकों का स्फुटन हुआ. छोटे शंबुकों को पेर्ना *विरिडिस* और *मेरेट्रिक्स कास्टा* जैसे द्विकपाटियों और स्क्विड्स मांस के पेस्ट से खिलाया गया और इनका भार 10 मि.मी. तक बढ़ गया. *हेमीफ्यूसस* जाति का स्फुटनशाला में पहली बार अंडजनन किया जा रहा है और प्रग्रहण स्थिति में इन की तेज़ बढ़ती को मानते हुए इस जाति को समुद्रकृषि के लिए चयन किया जा सकता है.

अंडसंपुटों के साथ *हेमीफ्यूसस* के छोटों का दृश्य

विशाखपट्टणम के भीमुनिपटणम में ओलीव राइडली कच्छप का धंसन

आंध्रा प्रदेश की तटरेखा ओलीव राइडली (*लेपिडोचेलिस ओलिवेसिए*) कच्छपों का प्रमुख नीडन स्थान है. यह कच्छप जाति सामान्यतः आंध्रा प्रदेश के उत्तरी तट, जहाँ तीन जिलाएं जैसे श्रीकाकुलम, विजयनगरम और विशाखपट्टणम आती हैं, पर नीडन करती है. ओलीव राइडली कच्छपों को आइ यू सी एन लाल सूची (आइ यू सी एन) में सुभेद्य जीव के रूप में वर्गीकृत किया गया है और इन्हें भारतीय वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम 1972 की अनुसूची 1 में जोडा गया है. यह तट राइडली कच्छपों के उप वयस्कों और हरित कच्छप *चेलोनिया मिडास* के किशोरों और उप वयस्कों के विकल्पीय विकासात्मक आवास भी है.

विशाखपट्टणम के भीमुनिपटणम के पास तट पर दिनांक 19 नवंबर 2012 को एक मृत ओलीव राइडली कच्छप दिखाया पडा. इस नमूने के सिर पर चोट लग गया था और लगता है कि आकस्मिक पकड की वजह से यह मर गया होगा. विशाखपट्टणम और भीमुनिपटणम के बीच के तटीय समुद्र में लगभग 25 कि.मी. की दूरी से गहन मत्स्यन किया जाता है. कच्छप के कारापेस की लंबाई और भार क्रमशः 70 से.मी. और 35-40 कि.ग्रा. थे. आकारमितीय मापन से यह मालूम पडा कि यह नमूना वयस्क नर था.

ओलीव राइडली कच्छप *लेपिडोचेलिस ओलिवेसिए*

(प्रलय रंजन बेहरा, विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र की रिपोर्ट)

पक्षी जीवजात को देखा गया

उल्लाल, सोमेश्वरा, मांगलूर, बन्दर, बेंगरे, कुद्रोली, हेगेमडिकोडी, मुल्की, काउप, उप्पुन्डा और मुरुडेश्वर के तटीय क्षेत्रों में किए गए 10 सर्वेक्षणों से समुद्री पक्षियों की पैंतीस जातियों की पहचान की गयी और इनके फोटोग्राफ ले लिए. इन में एग्रेट्स, हेरोन्स, कोरमोरान्ट्स, काइट्स, शांक्स, सान्डपाइपेर्स, लॉपविंग्स और प्लोवेर्स के ग्रुप शामिल थे. समुद्री पक्षियों में दिखाए पडे मुख्य पक्षी थे ब्राउन हेडड *लॉरसब्रन्निसेफालस* और ब्लैक हेडड *लॉरसरिडिबन्डस*. महासागरीय पक्षी पोमराइन स्कुआ स्टेरकोरारियसपोमारिनस के चार नमूनों को 08.11.2012 को मांगलूर तट से देखा गया. उप्पुन्डा में मछुआरों ने आवारा ब्लू फूटड बूबी *सुला नेबॉक्सी* को पकडा. यह पक्षी क्रम पेलिकानिफोर्म्स और सुलिडे कुटुम्ब में आता है. कर्नाटक तट से पहले इस की रिपोर्ट नहीं की गयी थी. ब्लू फूटड बूबी का प्राकृतिक प्रजनन स्थान पसफिक महासागर के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय द्वीप, गालपागोस द्वीप और इक्वडोर है जहाँ ये संरक्षित पक्षी जाति हैं. इन के आइ यू सी एन स्तर चिंता का विषय नहीं है. इनका मुख्य आहार तारली है और गालपागोस द्वीपों में किए गए अध्ययन यह सुझाव देते हैं कि आहार की कमी होने की वजह से इनका प्रजनन नहीं होता है.

(मांगलूर अनुसंधान केंद्र की रिपोर्ट)

बन्दर में 21.11.12 को दिखाए पडे लिटिल कोरमोरन्ट माइक्रोकारबोनीगर, लार्ज एग्रेट कासमेरोडयसाल्बस, वेस्टेर्न रीफ एग्रेट एग्रेटागुलारिस, कैट्टिल एग्रेट बुबुलकस इबिस और लिटिल एग्रेट एग्रेटागारज़ेटा

‘सिदी’ आफ्रिकन वंश की जनजाति पर बेंच मार्क सर्वेक्षण

‘सिदी’ जो आदिम जनजाति ग्रुप है और ट्राइबल सब प्लान योजना के अंदर सी एम एफ आर आइ के महत्वाकांक्षी पिंजरा मछली पालन के हितकारी हैं, के सामाजिक-व्यक्तिगत, सामाजिक-मनोवैज्ञानिक और सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं पर अध्ययन करने के उद्देश्य से बेंच मार्क सर्वेक्षण आयोजित किया गया. इस के लिए मल्टी स्टेज रान्डम साम्प्लिंग मेथेड उपयुक्त किया गया. इसके अनुसार कुल 135 सिदी आदिवासियों में से 45 पिंजरा मछली पालन में लगे हुए हैं, 45 आदिवासी संघ के हितकारी और 45 पिंजरा मछली पालन नहीं करने वाले और वे आदिवासी संघ के हितकारी भी नहीं हैं. अध्ययन के परिणाम से यह व्यक्त हुआ कि अधिकांश हितकारी लोग (58.33 प्रतिशत) हितकारी नहीं होने वाले अनपढ़ सिदी लोगों (55.55 प्रतिशत) की अपेक्षा हाइ स्कूल शिक्षा प्राप्त हैं. यह अनुमान किया जा सकता है कि नोन-पार्टिसिपन्ट हितकारियों का माहिक आय 854.25 रुपए है और इनकी तुलना में सहभागी हितकारियों का माहिक आय 1516.25 रुपए है. अधिकांश सहभागी हितकारियों (41.67 प्रतिशत) को पिंजरा मछली पालन में मध्यम स्तर की जानकारी है, 50.00 प्रतिशत हितकारियों को मध्यम स्तर की अभिवृत्ति है और 75 प्रतिशत को पिंजरा मछली पालन प्रौद्योगिकी की ओर मध्यम स्तर की कुशलता है.

(एस ई ई टी टी डी प्रभाग की रिपोर्ट)

एन ए आइ पी के अंदर शुक्तियों पर कवच मछली मूल्य श्रृंखला कार्यकलाप

बेलजियम के 12 शेफों के टीम ने केरल के एरणाकुलम जिला के मूतकुन्नम के शुक्ति पालन खेतों का मुआइना किया. डॉ.के.एस.मोहम्मद, प्रभागाध्यक्ष, एम एफ डी ने शुक्ति पालन, निर्मलीकरण और जीवंत शुक्ति के खपत के सारे पहलुओं पर विवरण दिया. फोर्ट कोच्ची के मलबार होटल ग्रुप द्वारा यूरोपियन शेफों के लिए आयोजित रसोइया विनिमय कार्यक्रम के अंदर मुआइना आयोजित किया गया. शेफों ने अपनी राय प्रकट की कि उन लोगों द्वारा खायी गयी शुक्ति विश्व स्तर का मानक होने वाली है और शुक्ति पालन करने वाले किसानों को आय जगाने के एक अच्छे उपाय के रूप में यह उद्यम सहायक होने की प्रत्याशा है.

डॉ.के.एस.मोहम्मद बेलजियम के शेफों को शुक्ति निर्मलीकरण दिखाते हुए

भारत के समुद्री मछुआरों के सामाजिक-आर्थिक स्तर में संरचनात्मक परिवर्तन

सामाजिक-आर्थिक मूल्यांकन प्रक्रिया द्वारा भारतीय समुद्री मात्स्यिकी सेक्टर में संरचनात्मक परिवर्तन का विश्लेषण किया गया. इस अध्ययन से यह व्यक्त हुआ कि भारत में मात्स्यिकी सेक्टर देश के सैकडों लोगों की आजीविका का महत्वपूर्ण स्रोत होने के साथ साथ देश के सकल घरेलू उत्पाद में सुसंगत योगदान देते हुए भारतीय अर्थ व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. इस सेक्टर में ही नहीं बल्कि समुद्री मत्स्यन समुदाय की ढांचे में भी द्रुत परिवर्तन हुआ है. पिछले तीन दशकों के दौरान (1980-2010) मत्स्यन प्रतिमान, नाव झुंडों के आकार, वितरण रीति और उपभोग में कई प्रकार के सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं जिन की वजह से अर्थव्यवस्था में सुधार हुआ है. सामाजिक-आर्थिक प्राचलों में हुए संरचनात्मक परिवर्तनों से मछुआरों के घरेलू स्तर, शिक्षा, धंधा और आय में भी प्रोत्साहजनक प्रगति हुई. मूलभूत मात्स्यिकी अवसंरचना में भी अच्छा परिवर्तन दिखाया पडा. अतः वर्तमान में हमारा प्रयत्न अब तक प्राप्त हुई उपलब्धियों का समाकलन करने, उनको टिकाऊ रखने और आगे के विकास के लिए एक सशक्त धरातल तैयार करने के लिए होना चाहिए.

(एस ई ई टी टी डी प्रभाग की रिपोर्ट)

तमिल नाडु के दो जिलाओं में कृत्रिम भित्तियों के परिनियोजन के लिए समुद्री सर्वेक्षण एवं स्थान चयन

“तमिल नाडु तट के सत्रह गाँवों के तटीय समुद्र में कृत्रिम भित्तियों की स्थापना” विषयक परामर्श परियोजना के भाग के रूप में कृत्रिम भित्ति स्थापित करने के लिए उचित स्थान के चयन के लिए समुद्री सर्वेक्षण चलाया गया. सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केंद्र, चेन्नई के तकनीकी कार्मिकों का टीम और सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र, टूटिकोरिन के निमज्जकों ने नागपट्टणम और पुतुकोट्टै जिलाओं में समुद्री सर्वेक्षण किया. नागपट्टणम जिला के वेल्लापल्लम, सेरुत्तूर, चिन्नन्गुडी, पेरुमालपेट्टै और पुतुकोट्टै जिला के काट्टुमावडी और मुतुकुडा को मिलाकर कुल छः गाँवों दो स्तरों में याने कि 14 से 15 सितंबर और 27 से 28 सितंबर, 2012 के दौरान समुद्री सर्वेक्षण चलाया गया. कृत्रिम भित्ति स्थापित करने के लिए चुने गए स्थानों की अनुकूलता निर्धारित करने के लिए पानी और मृदा के भौतिक और महासागरीय प्राचलों का परीक्षण किया गया.

(सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केंद्र)

मांगलूर बन्दर में वलय संपाश द्वारा शिंगटियों की असाधारण पकड

मांगलूर बन्दर में 28.09.2012 से 30.10.2012 तक ब्लैक फिन समुद्री शिंगटी (*एरियस जेल्ला*) का असाधारण अवतरण हुआ जिसे प्रति नाव को 800-2000 रुपए की दर में विपणन किया गया. शिंगटियों को तट से 2 कि.मी. की दूरी और 4 से 6 मीटर की गहराई से पकडा गया.

मांगलूर बन्दर में ब्लैक फिन समुद्री शिंगटी का असाधारण अवतरण

विशाखपट्टणम जिला में कृत्रिम भित्तियों पर अवगाह कार्यक्रम

एच आर डी प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंदर "समुद्री मछली उत्पादन बढ़ाए जाने के लिए कृत्रिम भित्तियों का निर्माण, परिनियोजन और उपयोग" पर अवगाह प्राप्त करने के उद्देश्य से 15 मछुआरों ने और सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र के दो अधिकारियों के साथ 19.11.2012 से 22.11.2012 के दौरान सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केंद्र का मुआइना किया.

कृत्रिम भित्तियों की अवधारणा, निर्माण, परिनियोजन और उपयोग तथा समुद्री मछली उत्पादन बढ़ाने में इनका योगदान आदि पर समझने के लिए मछुआरे युवा लोगों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया. विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र में एक दिन का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद उन्हें सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केंद्र में ले गया. उन्होंने 20.11.2012 को नीन्डकरा मत्स्यन गाँव का मुआइना किया और कृत्रिम भित्ति के परिनियोजन से लाभान्वित मछुआरों (53) के साथ बातचीत की. कृत्रिम भित्ति के परिनियोजन के वक्त होने वाले लाभ और कठिनाइयों के बारे में उन्होंने मछुआरों के साथ बात की. गाँव के अध्यक्ष ने कृत्रिम भित्ति परिनियोजन और इन स्थानों में मत्स्यन करने के हितों पर विवरण दिया. विशाखपट्टणम से आए मछुआरों ने इस संदर्भ में अपने संदेह पूछा और हितकारी मछुआरों से इस पर सुझाव प्राप्त किया. तीन प्रकार की कृत्रिम भित्ति जैसे ग्रूपर मोड्यूल, सी होर्स मोड्यूल और रीफ मछली मोड्यूल के निर्माण में प्रशिक्षण देने योग्य मछुआरे और आवश्यक मार्गनिर्देश देने के लिए विशेषज्ञ डॉ.एच.एम.कासिम और डॉ.जी.मोहनराज (सेवानिवृत्त प्रधान वैज्ञानिक गण) भी उपस्थित थे. उन्होंने जैव भार बढ़ाए जाने ,पुनर्वास, कमी होने वाले मछली स्टॉक के परिरक्षण के बारे में विशेषज्ञों और प्रभारी वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केंद्र के साथ चर्चा की.

कृत्रिम भित्ति निर्माण कार्य में लगे हुए प्रशिक्षणार्थी

प्रशिक्षणार्थी डॉ.मोहम्मद कासिम और डॉ.विनोद, प्रभारी वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केंद्र के साथ बातचीत करते हुए

प्रशिक्षणार्थियों ने पुलिकाट मत्स्यन गाँव का मुआइना किया और मछुआरों (45) के साथ कृत्रिम भित्ति परिनियोजन और कृत्रिम भित्ति के चारों ओर से वर्धित पकड प्राप्त करने के बारे में हितकारियों के साथ विचारों का विनिमय किया. पुलिकाट के मछुआरों के साथ बात करने पर उन्होंने पहली बार कृत्रिम भित्ति के परिनियोजन के दौरान सामना करनी पडी कठिनाइयों के बारे में विवरण दिया. विशेषज्ञ द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को कृत्रिम भित्ति परिनियोजन पर वीडियो दिखाया. उन्होंने मछली अवतरण केंद्र का मुआइना किया और रीफ क्षेत्र से मछली अवतरण देखा.

मछुआरा प्रशिक्षणार्थियों ने सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केंद्र, चेन्नई के अंदर कार्यरत कोवलम क्षेत्र केंद्र का मुआइना किया. उन्होंने केंद्र की गतिविधियों और रेती महाचिंगट के संतति उत्पादन, सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केंद्र, चेन्नई द्वारा किए गए पिंजरा मछली पालन कार्यविधियों की सराहना की. उन्होंने वैज्ञानिकों के साथ चर्चा की और केंद्र की प्रयोगशाला और स्फुटनशाला का मुआइना किया. सी एम एफ आर आइ के कार्यकलापों पर एक वीडियो कार्यक्रम उनको दिखाया गया. विभिन्न प्रकार की पखमछलियों जैसे समुद्री बास, कोबिया, मल्लेट, मिल्क फिश और अन्य पश्चजल पख मछलियों के संतति उत्पादन के बारे में प्रशिक्षणार्थियों को अवगाह मिला.

पुलिकाट मत्स्यन केंद्र में प्रशिक्षणार्थी

कृत्रिम भित्ति - मछुआरों के साथ आपसी चर्चा

कडलूर जिला के पिल्लुमेडू में मछुआरा मेला

तमिल नाडु कार्पोरेशन फोर डेवलपमेन्ट ऑफ वुमेन लिमिटड (तमिल नाडु सरकार का उपक्रम) के लिए सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केंद्र द्वारा की जाने वाली परामर्श परियोजना के भाग के रूप में नागपटणम, पुतुकोट्टै, कडलूर, कांचीपुरम और तिरुवल्लुवर जिलाओं के चुने गए 16 मत्स्यन गाँवों में कृत्रिम भित्तियों के परिनियोजन से होने वाली समस्याओं पर चर्चा करने के लिए वैज्ञानिकों और मछुआरों की आपसी चर्चा की श्रेणी आयोजित की गयी. निम्नलिखित गाँवों में राज्य मात्स्यिकी और स्थानीय पंचायत निकायों की सहकारिता से नवंबर और दिसंबर, 2012 के दौरान चर्चा बैठक आयोजित की गयी:

जिला	गाँव
नागपट्टणम	वेल्लापल्लम, सेरुत्तूर, चिन्नंगुडी, पेरुमालपेट्टै
पुतुकोट्टै	काट्टुमावडी और मुत्तुकुडा
कडलूर	पिल्लुमेडू और पुतुकुप्पम
कांचीपुरम	कडलूर चिन्न कुप्पम, महाबलिपुरम, चेम्मन्चेरी और कनतूर

तिरुवल्लुवर जिला के अरगन्कुप्पम में मछुआरा मेला

कांचीपुरम जिला में कडलूर चिन्नकुप्पम

नागपटणम जिला में वेल्लपालम

पुतुकोट्टै जिला में काट्टुमावडी

भिमिली, आंध्रा प्रदेश में मछुआरा - विशेषज्ञों की आपासी चर्चा

विशाखपट्टणम के भिमिली में 6 नवंबर, 2012 को कृत्रिम भित्ति पर आपसी चर्चा आयोजित की गयी. डॉ.जी.महेश्वरुडू, प्रभारी वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र, विशाखपट्टणम ने तटीय संपदाओं के प्रबंधन में कृत्रिम भित्तियों की प्रधान भूमिका पर भाषण दिया. मछुआरा समुदाय का समाज-आर्थिक स्तर बढ़ाने में कृत्रिम भित्तियों की भूमिका पर भी संक्षेप में बताया गया. डॉ.एच.मोहम्मद कासिम (सेवानिवृत्त प्रधान वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ) ने कृत्रिम भित्ति और इस के उद्देश्यों के पहलुओं पर भाषण दिया. उन्होंने जैव भार बढ़ाए जाने, पूनर्वास, कमी होने वाले मछली स्टॉक के परिरक्षण में कृत्रिम भित्तियों की सहायता पर विवरण दिया. कृत्रिम भित्तियों के विभिन्न रूपरेखा, निर्माण के विभिन्न पहलुएं, परिनियोजन और आर्थिकता पर विस्तृत चित्रण दिया. कृत्रिम भित्तियों के परिनियोजन द्वारा मछली उत्पादकता बहुगुना बढ़ाए जाने के बारे में उन्होंने ज़ोर दिया. उन्होंने ज़ोर दिया कि ये कृत्रिम भित्तियाँ टिकाऊ मछली उत्पादन और समुदाय पर आधारित संपदा प्रबंधन के लिए उपयुक्त मात्स्यिकी संपदा प्रबंधन का प्रमुख अभिगम है.

विशाखपट्टणम, आंध्रा प्रदेश के भिमिली में आपसी चर्चा बैठक का दृश्य

(विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र की रिपोर्ट)

डॉ.मोहम्मद कासिम भाषण देते हुए

विशाखपट्टणम में कृत्रिम भित्तियों पर जिला अधिकारियों की बैठक

विशाखपट्टणम के होटल ग्रीन पार्क में 7 नवंबर, 2012 को कृत्रिम भित्तियों पर आपसी चर्चा आयोजित की गयी. डॉ.जी.महेश्वरुडू, प्रभारी वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र ने कृत्रिम भित्तियों पर परिचय और तटीय संपदाओं के प्रबंधन में इनकी प्रधानता पर भाषण देते हुए कार्मिकों और विशिष्ट व्यक्तियों का संबोधन किया. मछुआरा समुदाय का समाज-आर्थिक स्तर बढ़ाने में कृत्रिम भित्तियों की भूमिका पर भी संक्षेप में बताया गया. डॉ.एच.मोहम्मद कासिम (सेवानिवृत्त प्रधान वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ) ने कृत्रिम भित्ति और इस के उद्देश्यों के पहलुओं पर भाषण दिया. उन्होंने जैव भार बढ़ाए जाने, पूनर्वास, कमी होने वाले मछली स्टॉक के परिरक्षण के में कृत्रिम भित्तियों की सहायता पर विवरण दिया. कृत्रिम भित्तियों के विभिन्न रूपरेखा, निर्माण के विभिन्न पहलुएं, परिनियोजन और आर्थिकता पर विस्तृत चित्रण दिया. कृत्रिम भित्तियों के परिनियोजन द्वारा मछली उत्पादकता बहुगुना बढ़ाए जाने के बारे में उन्होंने ज़ोर दिया. उन्होंने ज़ोर दिया कि ये कृत्रिम भित्तियाँ टिकाऊ मछली उत्पादन और समुदाय पर आधारित संपदा प्रबंधन के लिए उपयुक्त मात्स्यिकी संपदा प्रबंधन का प्रमुख अभिगम है.

श्री जे.पूर्णचन्द्र राव, पुलिस आयुक्त, विशाखपट्टणम ने अपने भाषण में व्यक्त किया कि जिला प्रशासन द्वारा मछुआरा समुदाय की आजीविका टिकाऊ बनाने की प्रारंभिक परियोजना के रूप में पूरे विशाखपट्टणम तट पर कृत्रिम भित्ति स्थापित करने की योजना बनायी है. विशिष्ट व्यक्तियों ने कृत्रिम भित्तियों के परिनियोजन और आर्थिकता पर वैज्ञानिकों के साथ अपने संदेह दूर करने में अभिरुचि दिखायी और सी एम एफ आर आइ के वैज्ञानिकों और कार्मिकों के प्रयास की सराहना की. बैठक में श्री वी.शेषाद्री, जिलाधीश एवं मजिस्ट्रेट और श्री जे.पूर्णचन्द्र राव, पुलिस आयुक्त, विशाखपट्टणम ने अभिनन्दन भाषण दिया. बैठक में उपस्थित अन्य विशिष्ट व्यक्तिः श्री अजय कलाम, अध्यक्ष, विशाखपट्टणम पत्तन न्यास, डॉ.विजय कुमार, एम डी, वी एन सी, प्रोफसर विजय प्रकाश और प्रोफसर प्रसन्न कुमार, आंध्रा विश्वविद्यालय, श्री श्रीनिवास राजु, (रियल एस्टेट बिल्डर) और डॉ. जी मोहन राज (सेवानिवृत्त प्रधान वैज्ञानिक), लवसन एड्वेर्ड (वैज्ञानिक) और सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम के तकनीकी कार्मिक थे.

(विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र की रिपोर्ट)

सीपी मछुआरा संघ की बैठक में सी एम एफ आर आइ की सहभागिता

सी एम एफ आर आइ कोच्ची से डॉ.के.एस.मोहम्मद, प्रभागाध्यक्ष के नेतृत्व में वैज्ञानिकों ने एन जी ओ, ए टी आर ई ई द्वारा ०७.१२.२०१२ को आयोजित मध्य केरल के सीपी मछुआ संघ की बैठक में भाग लिया. बैठक में वेम्बनाड झील के काली सीपी मछुआरों की विभिन्न समस्याओं पर चर्चा की गयी. निकर्षक की जालाक्षि का आकार ३५ मि.मी. में तय करना, किशोर सीपियों का विदोहन खत्म करना और अतिप्रचुरता होने वाले स्थानों से कम प्रचुरता होने वाले स्थानों में सीपियों का प्रतिरोपण और प्रसारण करना आदि सी एम एफ आर आइ द्वारा निर्धारित प्रबंधन उपाय मानने के लिए मछुआरा संघ सहमत हुए.

(मोलस्कन मात्स्यिकी प्रभाग की रिपोर्ट)

सी एम एफ आर आइ प्रकाशन मुफ्त में ऐक्सेस और डाउनलॉड करे

eprints@cmfri

संस्थान की वैज्ञानिक एवं अनुसंधान सूचनाओं की कार्यालयीन डिजिटल रिपोसिटरी

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र का पुस्तकालय ओनलाइन बना दिया - विरल पुस्तकें अब मुफ्त में स्वीकार्य

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र के पुस्तकालय में समुद्र विज्ञान से संबंधित पत्रिकाओं एवं पुस्ताकें के लगभग 5000 खंड उपलब्ध हैं. इन में खोज यात्रा रिपोर्ट जैसे ग्रेट बारियर रीफ की खोज, जोन मुर्रे खोज, पसफिक खोज, मान्नार खाडी की मुक्ता शुक्ति मात्स्यिकी की रिपोर्ट - 6 खंड, डाना रिपोर्ट आदि और इनके अतिरिक्त 18वीं सदी के दौरान प्रकाशित स्पंज, प्रवाल, प्लवक के प्रिन्ट भी उपलब्ध हैं.

प्रमुख खंडों का डिजिटाइसेशन किया गया है. इन्टरनेट में ये अपलॉड करने का काम प्रगति पर है. अब तक 277 खंडों का अपलॉडिंग पूरा हो गया है.

इन खंडों का पूरा पाठ्य रूप आप ऐक्सेस कर सकते हैं:

http://14.139.56.90:8080/dspace-1.7.2/handle/123456789/3355

डॉ.एस.एडिसन, भूतपूर्व निदेशक, सी टी सी आर आइ कन्याकुमारी में उद्घाटन भाषण देते हुए

कन्याकुमारी में "समुद्री पालन में हाल की प्रगतियाँ" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

सी एम एफ आर आइ विषिंजम अनुसंधान केंद्र द्वारा कन्याकुमारी में 10-12 अक्तूबर 2012 के दौरान समुद्री पालन में हाल की प्रगतियाँ: आजीविका के बेहत्तर विकल्प के उपाय पर एच आर डी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया. डॉ.एडिसन, भूतपूर्व निदेशक, सी टी सी आर आइ (भा कृ अनु प) एवं मसाला और कंद फसल का एफ ए ओ/ यू एन डी पी परामर्शक, ट्रिवान्ड्रम ने प्रशिक्षण का उद्घाटन किया.

अपने उद्घाटन भाषण में डॉ.एडिसन ने समुद्री पालन के क्षेत्र में सी एम एफ आर संस्थान की हाल की उपलब्धियों की सराहना की और तटीय क्षेत्र के लोगों की आजीविका बढ़ाए जाने में अन्य संपदाओं के साथ लघु पैमाने की समुद्री पालन गतिविधियों का एकीकरण करने की प्रधानता पर ज़ोर दिया. उन्होंने यह राय प्रकट की कि इस तरह की कार्यविधियों से न केवल तटीय पुरुषों को बल्कि महिलाओं को भी आर्थिक सहायिकी और लाभकारी धंधा मिलता है. डॉ.ए.सी.सी.विक्टर, भूतपूर्व प्रधान वैज्ञानिक एवं मोती उत्पादन विशेषज्ञ ने अपने बधाई भाषण में सी एम एफ आर आइ द्वारा विकसित और निदर्शन किए गए समुद्री शैवाल पालन, शंबु पालन, शुक्ति पालन, मोती उत्पादन, क्रस्टेशियन पालन और पख मछली पालन जैसी गतिविधियों का विवरण दिया. श्री रूबर्ट ज्योति, मात्स्यिकी सहायक निदेशक, प्रशिक्षण एवं विस्तार, तमिल नाडु सरकार ने अपने बधाई भाषण में बताया कि जिलाधीश तथा तमिल नाडु राज्य सरकार के परियोजना कार्मिक लोग समुद्री पालन गतिविधियों विशेषतः पिंजरा मछली पालन और अन्य नवोन्मेषी प्रौद्योगिकियों और इन पर अभिरुचि होने वालों को ओन हैन्ड प्रशिक्षण के बारे में बडी अभिरुचि दिखाते हैं. जिला प्रशासन की वित्तीय सहायता से तटीय भागों में समुद्री पालन करने के लिए सात टीमों की पहचान पर भी उन्होंने बताया. डॉ.आर.सत्यदास, प्रधान वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ विषिंजम ने अध्यक्षीय भाषण दिया. डॉ.ए.पी.लिप्टन, प्रधान वैज्ञानिक और डॉ.एस.जासमिन, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने क्रमशः स्वागत भाषण तथा कृतज्ञता ज्ञापन पेश किया.

तमिल नाडु सरकार के मात्स्यिकी विभाग ने प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए छः कर्मचारियों को प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्त किया. नेहरु युवा केंद्र ने राजीव गांधी राष्ट्रीय युवा विकास संस्थान (युवा कार्यक्रम मंत्रालय, भारत सरकार), श्रीपेरुम्पतूर के पहल के माध्यम से तटीय क्षेत्र के चार युवाओं को प्रशिक्षण के लिए नामित किया गया. मछुआरा लोगों, अनुसंधान अध्येताओं और उद्यमियों को मिलाकर कुल 30 सहभागियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया. सभी सहभागियों को पाठ्य विषयों का मैनुअल प्रदान किया गया. प्रशिक्षणार्थियों को पख मछलियों / कवच मछलियों का खुला सागर पिंजरा पालन, संतति उत्पादन तकनीक जैसे समुद्री मछली पालन में हाल में हुए विकासों पर बताया गया. प्रशिक्षणार्थियों को सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र, मंडपम तक ले गया. डॉ. जी.गोपकुमार, अध्यक्ष, सी एम एफ आर आइ का समुद्री संवर्धन प्रभाग और समुद्री संवर्धन प्रभाग के वज्ञानिक गण ने समुद्री संवर्धन में हाल में हुए विकासों के बारे में विवरण दिया. प्रशिक्षणार्थियों को कोबिया (*राचिसेन्ट्रोन कनाडम*) और पोम्पानो (*ट्रकिनोटस ब्लोची*) मछलियों के संतति उत्पादन प्रौद्योगिकी, खुले सागर पिंजरों में काबिया मछली पालन, समुद्री अलंकारी मछली पालन, जीवंत चारा उत्पादन और समुदी पालन के लिए खाद्य प्रौद्योगिकियों पर सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त हुआ.

प्रशिक्षणार्थी मंडपम क्षेत्रीय केंद्र के पखमछली स्फुटनशाला में

प्रशिक्षणार्थी और अन्य कार्मिक डॉ.जी.गोपकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, समुद्री संवर्धन प्रभाग के साथ सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में

इसके बाद प्रशिक्षणार्थियों को सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र तक ले गया. डॉ.एस.मदन, प्रभारी वैज्ञानिक द्वारा परिचयात्मक भाषण देने के बाद डॉ.आइ.जगदीश, वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा द्विकपाटी / जठरपाद के स्फुटनशाला प्रबंधन और पालन तकनीकों पर

प्राथमिक सूचनाएं प्रदान की गयी. टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र में अनुरक्षण किए गए सूक्ष्मशैवाल और रोटिफर जैसे जीवंत चारा प्रभेदों पर प्रशिक्षणार्थियों को जानकारी प्राप्त हुई.

विभिन्न एजेन्सियों में मात्स्यिकी विकास और वित्त के काम में लगे हुए कार्मिकों और प्रशिक्षणार्थियों के साथ दिनांक 12.10.2012 के अपराह्न को कन्याकुमारी में समूह-चर्चा आयोजित की गयी. प्रशिक्षणार्थियों की सक्रिय सहभागिता से डॉ.ए.पी.लिप्टन ने समूह-चर्चा का समन्वयन किया. श्री कजेन्द्र नाथन, लीड जिला प्रबंधक (एल डी एम), इंडियन ओवरसियेर्स बैंक ने बैंक से संबंधित कार्यक्रमों और परियोजनाओं तथा मछली पालन के वाणिज्यीकरण के लिए उपलब्ध विभिन्न प्रकार के विकल्पों के संबंध में प्रशिक्षणार्थियों और सरकारी कार्मिकों द्वारा उठाए गए संदेहों और मुद्दों का उत्तर दिया. श्री आर.शंकर, उप महा प्रबंधक, नबार्ड ने ग्रामीण नवोन्मेषी योजनाओं और नबार्ड से देने लायक सहायताओं के बारे में बताया.

पालन स्थान में प्रशिक्षण के बाद नबार्ड, लीड बैंक (आइ ओ बी) और मात्स्यिकी विभाग, तमिल नाडु के कार्मिक गण के साथ समूह-चर्चा

प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन कार्यक्रम 12.10.2012 को आयोजित किया गया. डॉ.राणी मेरी जोर्ज, प्रभारी वैज्ञानिक, विषिंजम अनुसंधान केंद्र के अध्यक्षीय भाषण से कार्यक्रम शुरू हुआ. सुश्री रीना सेल्वी, मात्स्यिकी उपनिदेशक, तमिल नाडु सरकार, कन्याकुमारी ने समापन भाषण पेश किया. उन्होंने सूचित किया कि बाजार में अच्छी गुणता वाली मछलियों के उच्च मूल्य और पूर्ति में होने वाली कमी को मानते हुए तमिल नाडु सरकार समुद्री मछली पालन विकसित करने के लिए तैयार है. उन्होंने यह भी बताया कि सी एम एफ आर आइ के साथ सहकारिता से चुने गए तटीय स्थानों में उचित तरह के पालन तकनीकों का कार्यान्वयन किया जाएगा. उन्होंने तमिल नाडु के टूटिकोरिन से कन्याकुमारी तक के तटीय भागों में नवोन्मेषी समुद्री मछली पालन करने के लिए सभी भागीदारों से आह्वान दिया. डॉ.आर.सत्यदास, प्रधान वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ विषिंजम अनुसंधान केंद्र ने सभा का स्वागत किया. श्री आइसक जयराज, मात्स्यिकी सहायक निदेशक और डॉ. ए.पलवेशम, प्रोफसर एवं अध्यक्ष, एम एस विश्वविद्यालय, राजक्कमंगलम ने प्रशिक्षणार्थियों का संबोधन किया. इस में उद्यमियों, किसानों और छात्रों को कुशलता और ज्ञान वर्धन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया.

(ए.पी.लिप्टन, प्रधान वैज्ञानिक, विषिंजम अनुसंधान केंद्र की रिपोर्ट)

विषिंजम अनुसंधान केंद्र में समुद्री अलंकारी मछली प्रजनन और जलजीवशाला अनुरक्षण पर प्रशिक्षण

सी एम एफ आर आइ द्वारा विषिंजम अनुसंधान केंद्र में समुद्री अलंकारी मछली प्रजनन और जलजीवशाला अनुरक्षण पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया. प्रशिक्षण 16 से 20 अक्तूबर 2012 के दौरान आयोजित किया गया. इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में चौदह मछुआरों ने भाग लिया. डॉ.बिजुकुमार, अध्यक्ष, जलीय जीवविज्ञान एवं मात्स्यिकी विभाग, केरल विश्वविद्यालय ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया. प्रशिक्षण की समापन सभा में श्रीमती एस.अनिता, उप निदेशक, परियोजना, ए डी ए के, मात्स्यिकी विभाग, केरल ने भागीदारों को प्रमाणपत्र प्रदान किए.

प्रशिक्षण कार्यक्रम में चर्चा सत्र का दृश्य

सुभेद्यता/धमकी में पडी समुद्री आवास व्यवस्थाओं पर क्षमता वर्धन कार्यशाला

कालिकट अनुसंधान केंद्र द्वारा 29.10.2012 से 31.10.2012 तक सुभेद्यता / धमकी में पड गए समुद्री आवास व्यवस्थाओं पर क्षमता वर्धन कार्यशाला आयोजित की गयी. अनुसंधानकारों, वन्य जीव विभाग के कार्मिकों, मात्स्यिकी तकनीकी स्कूल के अध्यापक और राज्य मात्स्यिकी विभाग के कार्मिकों को मिलाकर कुल बीस लोगों ने कार्यशाला में भाग लिया. सी एम एफ आर आइ के वैज्ञानिकों और तकनीकी कार्मिकों ने भी कार्यशाला में भाग लिया.

कालिकट अनुसंधान केंद्र में शंबु पालन पर प्रशिक्षण

कालिकट अनुसंधान केंद्र में 29-30 नवंबर 2012 के दौरान शंबु पालन पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया. 29 नवंबर को जीवविज्ञान पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया और अपराह्न को शंबु पर हान्ड्स ऑन प्रशिक्षण का निदर्शन किया गया. 30 नवंबर को प्रशिक्षणार्थियों को पडन्ना तक ले गया और वहाँ के विस्तृत शंबु पालन खेतों दिखाया. भागीदारों को श्री बालकृष्णन, केरल राज्य के शंबु पालन में मत्स्य केरल पुरस्कार विजेता और सी एम एफ आर आइ, कालिकट द्वारा आयोजित प्रथम प्रशिक्षण के भागीदार को परिचित काराया गया. भागीदारों ने पडन्ना में किए जाने वाले शंबु संतति रोपण कार्य में सक्रिय रूप से भाग लिया. प्रशिक्षणार्थियों को शंबु पालन के विभिन्न तरीकों और व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया गया.

श्री के.नन्दकुमार, आइ ए एस, जिलाधीश, रामनाथपुरम जिला दीप जलाते हुए प्रक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन करने का दृश्य

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में "कोबिया और पोम्पानो मछलियों के डिंभक पालन के लिए बडे पैमाने में जीवंत चारा के उत्पादन के नयाचार" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

मुख्यतः मछली और झींगा स्फुटनशालाओं में कार्यरत तकनीशियनों के लिए सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में "कोबिया और पोम्पानो मछलियों के डिंभक पालन के लिए बडे पैमाने में जीवंत चारा के उत्पादन के नयाचार" विषय पर आयोजित इस कार्यशाला का उद्देश्य समुद्री पखमछलियों विशेषतः कोबिया और पोम्पानो के संतति उत्पादन में प्रशिक्षण दिया जाना है. प्रशिक्षण 12 से 21 दिसंबर 2012 के दौरान आयोजित किया गया. श्री के.नन्दकुमार, आइ ए एस, जिलाधीश, रामनाथपुरम ने 12 दिसंबर 2012 को दीप जलाते हुए प्रशिक्षण का उद्घाटन किया और उद्घाटन भाषण दिया. डॉ.के.ईश्वरन, प्रभारी वैज्ञानिक, सी एस एम सी आर आइ, मंडपम और श्री अब्दुल नासर, अध्यक्ष, मरक्कायरपट्टणम पंचायत ने बधाई भाषण दिया. डॉ.जी.गोपकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, समुद्री संवर्धन प्रभाग, मंडपम क्षेत्रीय केंद्र ने अध्यक्षीय भाषण दिया. अपने भाषण में उच्च मूल्य वाली समुद्री पखमछलियों के प्रजनन और संतति उत्पादन की प्रधानता पर प्रकाश डाला. विभिन्न निजी झींगा स्फुटनशालाओं में कार्यरत लगभग 20 तकनीशियनों को मछली प्रजनन और संतति उत्पादन के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण दिया गया. प्रशिक्षण के दौरान अंडशावक विकास, सूक्ष्म शैवाल का संभरण और बडे पैमाने में संवर्धन, कैन्युलेशन, पी आइ टी टैगिंग, रोटिफर पालन, संवर्धन प्रक्रिया, होर्मोन उत्प्रेरण, आर्टीमिया संपुटों का स्फुटन, हरित पानी तकनीक, डिंभक पालन के नयाचार और रोग प्रबंधन आदि विषयों पर विशेष ध्यान दिया गया.

प्रशिक्षण मैनुअल का विमोचन

प्रशिक्षण सत्र

व्यावहारिक सत्र

कोचीन में प्रशिक्षण कार्यक्रम

सी एम एफ आर आइ, कोच्ची के वेलापवर्ती मात्स्यिकी प्रभाग द्वारा वैज्ञानिकों, तकनीकी कार्मिकों और अनुसंधान अध्येताओं के लिए 17-22 दिसंबर 2012 के दौरान वेलापवर्ती पखमछलियों के वर्गिकी विज्ञान और पहचान पर क्षमता वर्धन कार्यशाला विषय पर एक हफ्ते का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया. सी एम एफ आर आइ मुख्यालय और अनुसंधान केंद्रों से कुल 23 कार्मिकों ने कार्यक्रम में भाग लिया.

प्रशिक्षण कार्यक्रम के सहभागियों का दृश्य

- इडुक्की के तोडुपुषा के गांधी स्टडी सेन्टर में 40 मछुआरों के लिए 4-5 अक्तूबर के दौरान पेर्ल स्पोट मछली पालन और संतति उत्पादन पर दो दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया. डॉ.बोबी इग्नेशियस, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ ने कार्यक्रम का समायोजन किया.
- भुरा मल्लट *मुजिल सेफालस* और रेड स्नाप्पर *लूटजानस अर्जेन्टिमाक्युलाटस* के संतति पहचान और पिंजरे में पालन विषय पर आंध्रा प्रदेश के कृष्णा जिला के नागयलंका में 20 मछुआरों के लिए 16-17 नवंबर 2012 के दौरान फिशरीस पोलीटेकनिक में दो दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया. डॉ.इमेल्डा जोसफ, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ ने कार्यक्रम का समायोजन किया.

मद्रास अनुसंधान केंद्र में भारतीय समुद्रों की उपास्थिमीन संपदाएं विषय पर कार्यशाला

सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केंद्र, चेन्नई में 11 से 13 दिसंबर 2012 के दौरान भारतीय समुद्रों की उपास्थिमीन संपदाएं विषय पर परियोजना प्रारंभ कार्यशाला आयोजित की गयी. तलमज्जी मात्स्यिकी प्रभाग और सी एम एफ आर आइ मुख्यालय तथा विभिन्न क्षेत्रीय एवं अनुसंधान केंद्रों में कार्यरत परियोजनाओं से जुडे हुए वैज्ञानिकों और तकनीकी कार्मिकों ने कार्यशाला में भाग लिया. डॉ.वाइ.एस.यादवा, निदेशक, बी ओ बी पी-आइ जी ओ ने कार्यशाला का उद्घाटन किया. डॉ.पी.यू.सक्करिया, अध्यक्ष, तलमज्जी मात्स्यिकी प्रभाग ने परियोजना की प्रत्याशाएं और उद्देश्यों पर प्रकाश डाला. कार्यशाला के दौरान विभिन्न विषयों जैसे सुरा मात्स्यिकी का भौगोजिक स्तर और सुरा मात्स्यिकी प्रबंधन के लिए अनुसंधान अभिगम पर डॉ.ई.विवेकानन्दन, एमरिटस वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ, चेन्नई, सुरा और सुरा उप-उत्पादों के व्यापार का स्तर विषय पर डॉ.ओ.के.सिन्धु, तकनीकी अधिकारी, एम पी ई डी ए, चेन्नई, गुजरात के तिमि सुरा मत्स्यन विषय पर डॉ.जो किषकूडन, वरिष्ठ वैज्ञानिक, आण्विक वर्गिकी विज्ञान विषय पर डॉ. वी. श्रीनिवास राघवन, वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ, चेन्नई और भारत के गभीर सागर उपास्थिमीन विषय पर डॉ.ए.अनरोस, निदेशक, एफ एस आइ का चेन्नई बेस द्वारा भाषण दिए गए. कार्यशाला के दौरान चीफ एक्सिक्यूटिव श्री विन्सेन्ट, असोसिएशन ऑफ डीप सी गोइंग आर्टिसनल फिशरमेन (ए डी एस जी ए एफ) और श्री पेरियनायागम, तुत्तूर के सुरा मछुआरा के साथ आपसी चर्चा और श्री बलरामन, टैक्सिडेर्मिस्ट, सरकार संग्रहालय, चेन्नई द्वारा टैक्सिडेर्मी (निदर्शन) सत्र आयोजित किया गया. डॉ.ए.अनरोस, निदेशक, एफ एस आइ का चेन्नई बेस ने समापन भाषण दिया.

(शोभा जो किषक्कूडन, मद्रास अनुसंधान केंद्र की रिपोर्ट)

कारवार में समुद्री संवर्धन प्रभाग की परियोजना की पुनरीक्षण कार्यशाला

समुद्री संवर्धन प्रभाग की दो चालू परियोजनाओं जैसे समुद्री पिंजरा मछली पालन और तटीय समुद्र कृषि में नवोन्मेष और "चुनी गयी पख मछलियों और कवच मछलियों के संतति उत्पादन प्रौद्योगिकियों के विकास और मानकीकरण" पर 5 से 7 दिसंबर 2012 के दौरान कारवार में तीन दिवसीय पुनरीक्षण कार्यशाला आयोजित की गयी. निदेशक और इन परियोजनाओं से जुडे हुए वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में भाग लिया. अब तक किए गए अनुसंधान कार्यों और शेष अवधि के दौरान किए जाने वाले कार्यों पर गंभीर चर्चा की गयी.

डॉ.जी.सैदा रावु समुद्री संवर्धन वैज्ञानिकों का संबोधन करने का दृश्य

कारवार अनुसंधान केंद्र में "खुला सागर पिंजरा मछली पालन का प्रचार" पर कार्यशाला

कारवार अनुसंधान केंद्र में 4-5 अक्तुबर 2012 के दौरान एन एफ डी बी द्वारा "खुला सागर पिंजरा मछली पालन का प्रचार" पर कार्यशाला आयोजित की गयी. कार्यशाला में मछलियों के नर्सरी पालन, स्वास्थ्य और पिंजरा निर्माण सहित पिंजरा मछली पालन के विभिन्न पहलुओं के साथ पिंजरा परिचालन के लिए पर्याप्त मछली संततियों और खाद्य की पूर्ति के बारे में विस्तृत रूप में चर्चा की गयी. महाराष्ट्र, कर्नाटक, उड़ीषा और पश्चिम बंगाल से आए मछुआरों और कर्नाटक और महाराष्ट्र से आए कार्मिकों ने कार्यशाला में भाग लिया. डॉ.मधुमिता मुखर्जी, कार्यकारी निदेशक, एन एफ डी बी, श्री बाल माने, एम एल ए, रत्नगिरी, सी एम एफ आर आइ मुख्यालय और कारवार एवं मांगलूर अनुसंधान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में भाग लिया. कार्यशाला के दौरान सहभागियों के लिए समुद्री मछली पालन खेत तक फील्ड ट्रिप भी आयोजित की गयी.

डॉ.फिलिप्पोस, प्रभारी वैज्ञानिक सहभागियों का संबोधन करते हुए

हिन्दी में तकनीकी भाषण

सी एम एफ आर आइ मुख्यालय के वैज्ञानिकों और तकनीकी कार्मिकों के लिए 15.12.2012 को *मत्स्यन तकनीक और जलीय पर्यावरण* विषय पर हिन्दी में तकनीकी भाषण आयोजित किया गया. श्री राकेश कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी कार्यक्रम में अध्यक्ष रहे. डॉ.प्रवीण पी., वरिष्ठ वैज्ञानिक, केंद्रीय मात्स्यकी प्रौद्योगिकी संस्थान ने अत्यंत आकर्षक वीडियो क्लिप्पिंग और स्लाइडों के साथ तकनीकी भाषण प्रस्तुत किया. कुल 20 वैज्ञानिकों और तकनीकी कार्मिकों ने कार्यक्रम में भाग लिया. भाषण के बाद हुई आपसी चर्चा सत्र में डॉ.वी.कृपा, अध्यक्ष, एफ ई एम डी अध्यक्ष रही. चर्चा में डॉ.सुनिल मोहम्मद, अध्यक्ष, एम एफ डी, डॉ.पी.सी.तोमस, प्रधान वैज्ञानिक, एम बी टी डी, डॉ.ग्रिनसन जोर्ज, वरिष्ठ वैज्ञानिक और श्री के.एम.वेणुगोपालन, टी-5 (तकनीकी अधिकारी) ने सक्रिय रूप से भाग लिया.

मांगलूर अनुसंधान केंद्र में हिन्दी में यूनिकोड के प्रयोग पर कार्यशाला

मांगलूर अनुसंधान केंद्र में राजभाषा कार्यान्वयन के भाग के रूप में 12.12.2012 को राजभाषा ज्ञान और हिन्दी में यूनिकोड का प्रयोग पर कार्यशाला आयोजित की गयी. श्रीमती लक्ष्मी देवी, वरिष्ठ प्रबंधक, कार्पोरेशन बैंक, मांगलूर ने हिन्दी में यूनिकोड के प्रयोग पर भाषण दिया.

राजभाषा संगोष्ठी में सहभागिता

डॉ.लक्ष्मी पिल्लै, वैज्ञानिक ने नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला, कोचीन द्वारा 23.11.2012 को आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा वैज्ञानिक संगोष्ठी में भाग लिया और *हरित सोचो* विषय पर हिन्दी में लेख प्रस्तुत किया.

केंद्रों में निरीक्षण

निदेशक, सी एम एफ आर आइ ने तिमाही के दौरान सी एम एफ आर आइ के कारवार और विषिंजम अनुसंधान केंद्रों के राजभाषा

रा भा का स बैठक

संस्थान की राजभाषा कार्यन्वयन समिति की तिमाही बैठक 21.12.2012 को निदेशक, सी एम आर आइ, कोचीन की अध्यक्षता में आयोजित की गयी, बैठक में अक्तुबर-दिसंबर, २०१२ तिमाही के दौरान की राजभाषा कार्यन्वयन की गतिविधियों पर चर्चा हुई।

प्रदर्शनी

सि एम एफ आर आइ की निम्नलिसित प्रदर्शनियों में सहभागिता

- एशिया एवं पसफिक में कृषि प्रमुखता की ट्रानसबोन्डरी रोगों के प्रबंधन पर विशेषज्ञ परामर्श के सिलसिले में एन ए एस सी समुच्चय, नई दिल्ली में 10-12 अक्तूबर 2012 के दौरान आयोजित प्रदर्शनी.
- पान एशियन दूरसंवेदन सम्मेलनः पी ओ आर एस ई सी विषयक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के सिलसिले में 05-09 नवंबर 2012 के दौरान आइ एम ए हाउस, कोच्ची में आयोजित प्रदर्शनी.
- लियो XIII वीं हायर सेकन्डरी स्कूल के 125 वां वर्षागांठ के सिलसिले में 05-09 नवंबर 2012 के दौरान आलप्पुषा में आयोजित प्रदर्शनी.
- एन ए एस सी समुच्चय, नई दिल्ली में 10-12 अक्तूबर 2012 के दौरान स्वदेशी विज्ञान अभियान *स्वाश्रयभारतम* के सिलसिले में आयोजित प्रदर्शनी.

एन ए एस सी समुच्चय के सी एम एफ आर आइ पावलियन में महा निदेशक, उप महा निदेशक(मा.) और मात्स्यिकी निदेशकों का मुआइना

आइ एम ए हाउस, कोच्ची में अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी पी ओ आर एस ई सी

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में पादप रोपण कार्यक्रम

सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र के कर्मचारी मनोरंजन क्लब ने 29 नवंबर 2012 को अतिथि गृह के परिसर में पादप रोपण कार्यक्रम आयोजित किया. डॉ.जी.गोपकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक ने पादप रोपण कार्यक्रम का नेतृत्व किया. कर्मचारियों और उनके परिवार सदस्यों ने सक्रिय रूप से पादप रोपण कार्यक्रम में भाग लिया. नारियल और नीम के करीब 100 पौधों का रोपण किया गया.

डॉ.जी.गोपकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक, मंडपम क्षेत्रीय केंद्र नीम के पौधों का रोपण करने का दृश्य

डॉ.जी.गोपकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक, मंडपम क्षेत्रीय केंद्र नारियल के पौधों का रोपण करने का दृश्य

कर्मचारी सदस्यों द्वारा पौधों का रोपण करने का दृश्य

सी एम एफ आर आइ मनोरंजन क्लब का सहाय हस्त

सी एम एफ आर आइ के कर्मचारी मनोरंजन क्लब द्वारा 19 अक्तूबर 2012 को सी एम एफ आर आइ, कोच्ची, एन बी एफ जी आर, कोच्ची और सी आइ एफ आर आइ, कोच्ची के कर्मचारियों द्वारा दिए गए कपडे मानसिक रूप से अपंग, मूक और बधिर लोगों के चारिटी होम-इवान्जलाश्रम (पंजीकरण सं.522/97), कूनम्माव, एरणाकुलम के सदस्यों को प्रदान किए गए. यहाँ विभिन्न स्थानों से बचाए गए लगभग 150 लोग रहते हैं. यहाँ के महिलाओं, पुरुषों और बच्चों को कपडे प्रदान किए गए

सी एम एफ आर आइ कर्मचारी मनोरंजन क्लब के सदस्य ब्रदर अमल, चारिटिबिल सोसाइटी के अध्यक्ष और चारिटी होम के सदस्यों को कपडे प्रदान करने का दृश्य

मात्स्यिकी विज्ञान के क्षेत्र में वर्ष 1954 से लेकर प्रमुख इंडियन जर्नल

वार्षिक चंदा
रु. 1000 $ 100
निदेशक, सी एम एफ आर आइ
कोच्ची - 682 018 से संपर्क करें

पुस्तक समीक्षा

भारतीय समुद्रों के आकर्षक स्तनियों में मजेस्टिक व्हेल, इन्टलिजेन्ट डोलफिन, प्यारी समुद्री गाय समुद्री जीव संपदाओं में कुछ महत्वपूर्ण जातियाँ हैं. इनकी पहचान, आवास स्थान के स्वभाव पर पर्याप्त विवरण की कमी और वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम के अंदर इनके प्रग्रहण में होने वाला प्रतिबंध इस विशेष खतरे में पडे जीवों पर अनुसंधान करने वालों के सामने की बाधाएं हैं. केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का भारत की समुद्री स्तनी जातियाँ विषय पर हाल ही में निकाले गए प्रकाशन में भारतीय समुद्रों में पायी जाने वाली 26 स्तनि जातियों पर सारी सूचनाएं दी गयी है. संस्थान वर्ष 1947 से लेकर, विशेषतः वर्ष 2003 से विवरण दिया गया है जिस से पाठक उत्सुकता बढ़ जाएगी. लेखकों ने वैज्ञानिक शब्दावली भी जोड दी है जिस की सहायता से पाठक पुस्तक का पाठ व्यक्तता और आसानी से पढ़ सकता है. विस्तृत पाठ के अलावा अगर मुख्य आकारमितीय विशेषताओं पर तुलनात्मक सारणी दी गयी है तो और भी अच्छा होगा.

पुस्तक का क्षीर्षक	**भारत की समुद्री स्तनी जातियाँ**
लेखक	ई. विवेकानन्दन और आर. जयभास्करन, सी एम एफ आर आइ के वैज्ञानिक
विर्शषताएं	146 चीत्र, 32 सारणियाँ, 622 संदर्भ वर्ष 2012; 228 पृष्ठ हार्ड बाउन्ड
मूल्य	रु. 750 यू एस $50
प्रकाशन	केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान www.cmfri.org.in
ISBN	978-8-923271-5-0

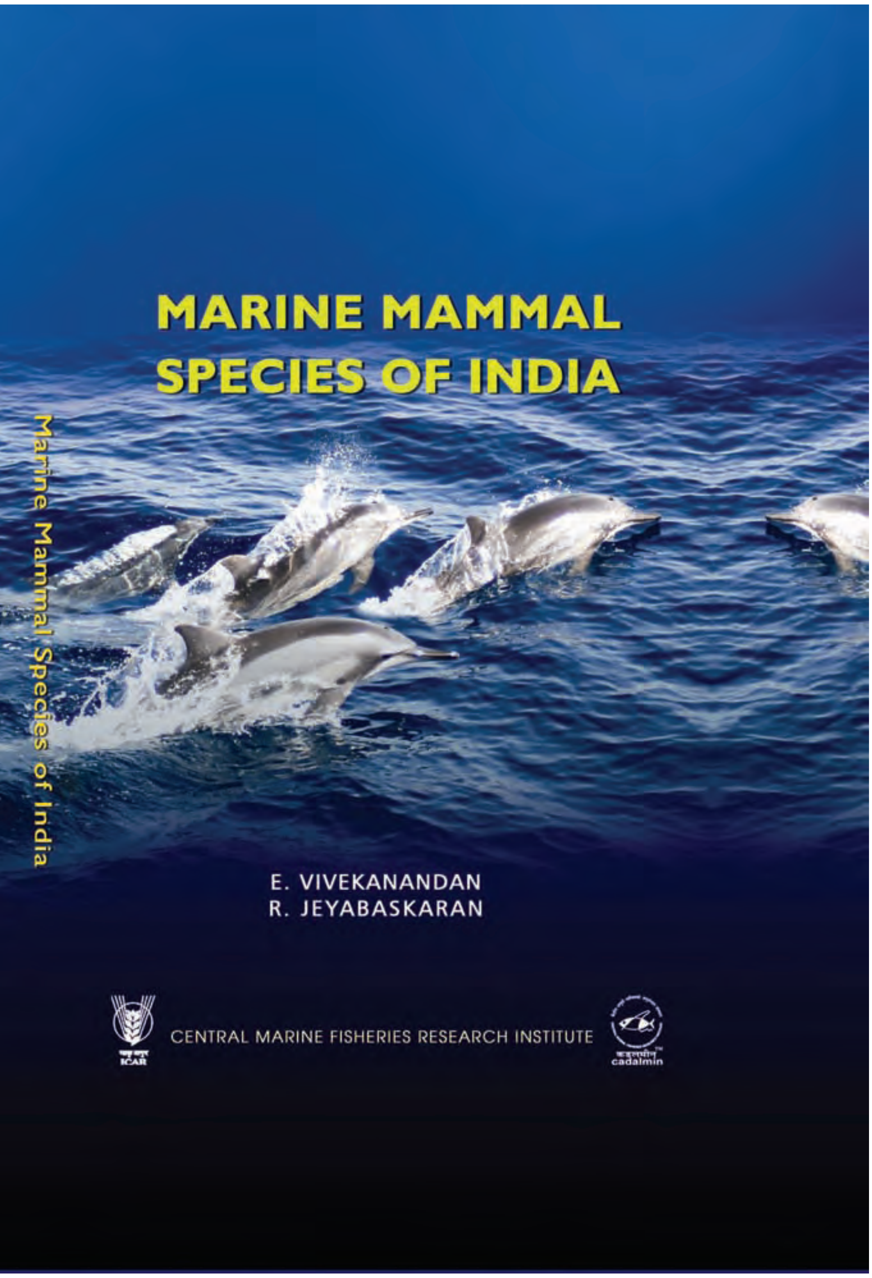

समुद्री पुलिनों में धंसने वाले समुद्री स्तनी मानव के लिए आकर्षण की बात है. समुद्र के इन महाकाय जीवों का शव पुलिन पर धंसने पर उनको देखने के लिए हमेशा भीड़ होती है. भारतीय समुद्र तटों के विभिन्न भागों में पिछले 150 वर्षों के दौरान हुए तिमि धंसन के बारे में लेखकों ने आवश्यक स्थानों में प्रासंगिक उपाख्यानों के साथ विवरण किया है. विशाखपट्टणम में 28 फरवरी 1853 को धंस गए एक छोटाकार मादा स्पेर्म व्हेल का कंकाल और सर वाल्टर एलियट द्वारा इसे ब्रिटीश संग्रहालय को उपहार के रूप में देने की रिपोर्ट एक अच्छा उदाहरण है प्राकृतिक आवासों में इन मनोहर जीवों की स्पाउटिंग, ब्रीचिंग, स्पाइ होप्पिंग और लॉब टेइलिंग जैसे विभिन्न गतिविधियों के व्यक्त और स्पष्ट चित्रण से पुस्तक को और भी आकर्षक बनाया गया है. ये फोटोचित्र अत्यधिक आकर्षक और सराहना योग्य हैं. भविष्य के लिए निर्देश के भाग में इन सुभेद्य जीवों, जो परिरक्षण अभियान के प्रतीक हैं और इन पर देश में और भी अनुसंधान आवश्यक है, के परिरक्षण और इन को समझने के लिए आवश्यक कार्यक्रमों के रूपायन के लिए दिशानिर्देश प्रदान करेगा.

यह प्रकाशन अनुसंधानकारों, योजनाकारों और छात्रों के लिए एक उपयोगी मार्गदर्शक ग्रंथ होगा. यह पुस्तक समुद्री जीवों पर अभिरुचि होने वाले लोगों विशेषतः प्रकृतिवादियों, नाविकों और स्तनियों का अध्ययन करने में अभिरुचि होने वाले लोगों के लिए महासागर के इन चमत्कार जीवों के बारे में जानने के लिए पढ़ने योग्य और प्रभावित करने योग्य के रूप में मानी जाती है.

समीक्षाः
वी.कृपा, अध्यक्ष,
मात्स्यिकी पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग,
केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,
कोचीन, भारत

कृ वि कें वैज्ञानिक सलाहकार समिमि बैठक

कृषि विज्ञान केंद्र के वर्ष 2012 के दौरान की वैज्ञानिक सलाहकार समिति (एस ए सी) की बैठक 29 अक्तूबर, 2012 को नारक्कल परिसर में आयोजित की गयी. डॉ.एस.प्रभुकुमार, क्षेत्रीय परियोजना निदेशक, क्षेत्र VIII ने डॉ.पी.वी.बालचन्द्रन, निदेशक, विस्तार, केरल कृषि विश्वविद्यालय की उपस्थिति में बैठक का उद्घाटन किया. डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ बैठक में अध्यक्ष रहे. अपने भाषण में उन्होंने कहा कि एरणाकुलम जिला की विशेष स्थिति पर विचार करते हुए उच्च मूल्य की कृषि और शहरी कृषि को प्राथमिकता दी जानी चाहिए. उन्होंने उच्च सान्द्रता में करी के पत्ते के वाणिज्यिक तौर के पालन और मछली-पोक्काली की एकीकृत कृषि के लिए कृ वि केंद्र द्वारा उठाए गए कदमों की सराहना की. बंजर भूमि में सामूहिक फलोद्यान का विकास (डी-सी ओ डब्लियू एल) कार्यक्रम के प्रचार के लिए कृ वि केंद्र द्वारा उठाए गए कदम की भी उन्होंने सराहना की.

डॉ.एस.प्रभुकुमार वैज्ञानिक सलाहकार समिति बैठक-2012 का उद्घाटन करने का दृश्य

डॉ.एस.प्रभुकुमार ने कृषि विज्ञान केंद्र, एरणाकुलम को तेवरा परिसर में प्रशासनिक मकान के निर्माण के लिए क्षेत्रीय परियोजना निदेशालय से सारी वित्तीय सहायताएं प्रदान करने की वादा की. केरल में पेर्ल स्पोट मछली की बडी मांग को मानते हुए उन्होंने यह सुझाव दिया कि कृ वि केंद्र में अब होने वाली पेर्ल स्पोट मछली के संतति उत्पादन की क्षमता बढ़ायी जानी चाहिए.

कृ वि कें द्वारा चावल खेत के यंत्रीकरण पर फामेर्स फील्ड स्कूल (एफ एफ एस)

चावल खेत में पावर वीडर परिचालन का दृश्य

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा कालडी के निकट कांजूर में चावल यंत्रीकरण पर फामेर्स फील्ड स्कूल (एफ एफ एस) आयोजित किया. इस में तीन सत्र थे. यंत्रीकृत पौधा रोपण पर 31 अक्तूबर 2012 को प्रशिक्षण का पहला सत्र चलाया गया. चावल यंत्रीकरण के लिए केरल में ज्ञात विशेषज्ञ डॉ.शाजी जेम्स, कार्यक्रम समायोजक, पालक्काड ने प्रशिक्षण दिया. दूसरा सत्र यंत्रीकृत रोपण पर 16.11.2012 को आयोजित किया गया. श्री अनवर सादत्त, एम एल ए ने इस सत्र का उद्घाटन किया और इसके बाद चावल खेत के परिरक्षण के लिए प्रतिज्ञा ली गयी. डॉ.शाजी जेम्स और डॉ.षिनोज सुब्रमण्यन ने क्लास चलाए और 2 एकड़ चावल खेत में चावल रोपण मशीन उपयुक्त करके रोपण परिचालन किया गया. सूखे बीज के रोपण के मशीन का निदर्शन भी किया गया. चावल खेतों में पावर वीडर के प्रयोग पर 06.12.2012 को तीसरा सत्र चलाया गया. डॉ.षिनोज सुब्रमण्यन ने पावर वीडर उपयुक्त करके चावल खेत से खरपतवार निकालने के तरीके का निदर्शन किया गया.

पी ए यू, लुधियाना में राष्ट्रीय सम्मेलन की प्रदर्शनी में कृ वि केंद्र की सहभागिता

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना में 20,21 और 22 नवंबर 2012 के हुए कृषि विज्ञान केंद्रों के राष्ट्रीय सम्मेलन के सिलसिले में आयोजित प्रदर्शनी में कृषि विज्ञान केंद्र (एरणाकुलम) ने स्टाल सजाया. लुधियाना के और बाहर के विभिन्न विश्वविद्यालयों के छात्र और लुधियाना शहर के आम लोगों, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, विभिन्न विश्वविद्यालयों, देश के विभिन्न भागों के कृषि विश्व विद्यालयों और अन्य संगठनों से विशिष्ट व्यक्तियों और प्रतिनिधियों ने स्टाल का मुआइना किया. केरल की राज्य मछली पेर्ल स्पोट (करिमीन) के जीवित नमूने प्रदर्शनी का आकर्षक केंद्र था. इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के मत्स्यन गिअर, महा चिंगट का स्थायी नमूना, झींगा, ट्यूना, सीपी, शंबु और स्क्विड, समुद्री मछली पिंजरा, खरगोश अपशिष्ट का कंपोस्टिंग एकक, पोक्काली खेत का नमूना, काली मिर्च की झाडी, वर्णा मछली खाद्य, कृ वि केंद्र के खाद्य उत्पादों के पैकेट, हरा शैवाल एक्स्ट्रैक्ट, हरित शंबु एक्स्ट्रैक्ट, पोक्काली चावल और धान, बीज, अंकुर और एरणाकुलम जिला में कृ वि केंद्र के प्रौद्योगिकी हस्तक्षेपों को दर्शाने वाले

डॉ.के.डी.कोकाते, उप महानिदेशक (कृषि विस्तार) और डॉ.गुरबच्चन सिंह, अध्यक्ष, ए एस आर बी कृ वि केंद्र के स्टाल का मुआइना करते हुए

पोस्टरों का प्रदर्शन किया गया. विशिष्ट व्यक्तियों को हरित शैवाल एक्स्ट्रैक्ट के नमूने आंकडा संग्रहण के लिए मुफ्त में दिया गया.

कार्यक्रम में सहभागिता

डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक

- भा कृ अनु प, नई दिल्ली में 8 अक्तूबर, 2012 को महानिदेशक द्वारा बुलाई गयी बैठक में भाग लिया.
- नई दिल्ली में 6 नवंबर, 2012 को भा कृ अनु प के शासी निकाय की 225वीं बैठक में भाग लिया.
- सी एम एफ आर आइ मुम्बई अनुसंधान केंद्र में 15 से 17 नवंबर 2012 के दौरान अनुसंधान पुनरीक्षण बैठक.
- 22 से 24 नवंबर 2012 के दौरान हैदराबाद के मात्स्यिकी विकास आयुक्त के साथ बैठक और विजयवाडा के पास पिंजरा मछली पालन स्थान का मुआइना.
- नई दिल्ली में 5 और 6 दिसंबर 2012 को महानिदेशक, भा कृ अनु प द्वारा बुलाई गई बैठक.
- 7 दिसंबर 2012 को गोवा शिपयार्ड का मुआइना और कारवार अनुसंधान केंद्र के अनुसंधान केंद्र के अनुसंधान कार्यों की पुनरीक्षण बैठक.
- कन्याकुमारी में 14 और 15 दिसंबर 2012 को विषिंजम अनुसंधान केंद्र के अनुसंधान कार्यों की पुनरीक्षण और पिंजरा मछली पालन की प्रगति पर बैठक.

डॉ.(श्रीमती) वी.कृपा, अध्यक्ष, एफ ई एम डी विमला पब्लिक स्कूल, तोडुपुषा में 22 अक्तूबर 2012 सोमवार को आयोजित सयन्स एक्स्पो 2012 में मुख्य अतिथि रही.

- केंद्रीय मीठा पानी जलकृषि संस्थान, भुवनेश्वर, उड़ीसा में 30 अक्तूबर 2012 को आयोजित संस्थान प्रबंधन समिति में सदस्य के रूप में भाग लिया.
- सी पी सी आर आइ, कासरगोड में 5 से 7 नवंबर 2012 के दौरान आयोजित 22वां स्वदेशी सयन्स कोंग्रेस में भाग लिया और समुद्री आवास विषय पर विशेष भाषण दिया.

डॉ.आर.नारायणकुमार, अध्यक्ष, एस ई ई टी टी डी ने एन ए ए आर एम, हैदराबाद में 8-19 अक्तूबर, 2012 के दौरान आयोजित नेतृत्व विकास पर प्रबंध विकास (एक प्री-आर एम पी कार्यक्रम) में भाग लिया.

- भा कृ अनु प में 4-5 दिसंबर 2012 के दौरान आयोजित मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थानों के आर एफ डी नोडल अधिकारियों की बैठक में भाग लिया.
- एन डी आर आइ, कर्नाल में 8 दिसंबर 2012 को आयोजित भा कृ अनु प संस्थानों के पी एम ई सेलों की पुनरीक्षण कार्यशाला और सेन्सिटाइसेशन बैठक.

डॉ.जी.गोपकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक, मंडपम क्षेत्रीय केंद्र ने 23-25 सितंबर 2012 के दौरान सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र में आयोजित समुद्री संवर्धन कार्यक्रमों पर तकनीकी सत्र में भाग लिया.

- कोच्ची में 17 नवंबर 2012 को आयोजित के यू एफ ओ एस की शासी परिषद बैठक में भाग लिया.

डॉ.विनय डी.देशमुख, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी वैज्ञानिक, मुम्बई अनुसधान केंद्र ने भा कृ अनु प आर सी गोवा में 09.11.2012 और 10.11.2012 को आयोजित 22वीं क्षेत्रीय समिति बैठक में भाग लिया.

डॉ.जी.महेश्वरुडु, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी वैज्ञानिक ने एन एफ डी बी सम्मेलन कक्ष, सेकन्दराबाद में 9 अक्तूबर 2012 को आयोजित मात्स्यिकी सेक्टर में कुशलता उन्नयन के लिए आवश्यक क्षेत्रों की पहचान और मोडल करिकुलम का विकास पर आयोजित बैठक में भाग लिया.

- काकिनाडा में 29 अक्तूबर 2012 को एस पी आइ सी ए एम द्वारा जलकृषि, नई साध्यताएं, बाधाएं विषय पर आयोजित कार्यशाला में संपदा व्यक्ति के रूप में भाग लिया.
- केंद्रीय खारा पानी जलजीवपालन संस्थान, चेन्नई में 14 दिसंबर 2012 को आयोजित संस्थान प्रबंधन समिति में सदस्य के रूप में भाग लिया.

डॉ.के.के.फिलिपोस, प्रभारी वैज्ञानिक और **डॉ.एस.आर.कृपेश शर्मा**, वैज्ञानिक ने 1 नवंबर, 2012 को हारवाड़ में सी आइ बी ए के तालाब में एशियन समुद्री बास पालन के स्थान पर मुआइना.

- एन ए ए एस सी समुच्चय, नई दिल्ली में 3-8-2012 को भारत में समुद्र कृषि विकास पर एन एफ डी बी द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय ब्रेइन स्टोर्मिंग में भाग लिया.
- आइ आइ एच आर, बांगलूर में 7 और 8 अगस्त 2012 को एन आइ सी आर ए प्रौद्योगिकी निदर्शन पर परिवीक्षा कार्यशाला में भाग लिया.

डॉ.के.के.फिलिपोस, प्रभारी वैज्ञानिक ने तापीय पावर परियोजना की वजह से विस्थापित मछुआरों को बदल आजीविका के विकास की साध्यताओं पर विवरण देने के लिए टाटा पावर द्वारा बुलाई गयी बैठक में भाग लिया.

डॉ.के.विनोद, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी वैज्ञानिक ने एन आइ सी आर ए परियोजना के सिलसिले में दिनांक 19.12.2012 को कडलूर जिला के दस गाँवों में आयोजित मछुआरा मेले में भाग लिया.

विदेश में प्रतिनियुक्ति

डॉ.प्रतिभा रोहित और डॉ.अब्दुसमद मलेशिया में

सेकन्ड वर्किंग पार्टी ऑन नेरिटिक ट्यूना (2 डब्लियू पी एन टी)
19-21 नवंबर 2012

डॉ.प्रतिभा रोहित, वरिष्ठ वैज्ञानिक, मांगलूर अनुसंधान केंद्र और डॉ.अब्दुसमद, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ, कोचीन ने पेनांग, मलेशिया में 19-21 नवंबर 2012 के दौरान इंडियन ओशियन ट्यूना कमीशन (आइ ओ टी सी) द्वारा आयोजित सेकन्ड वर्किंग पार्टी ऑन नेरिटिक ट्यूना (2डब्लियू पी एन टी) में भाग लिया. बैठक में भारत की अनन्य आर्थिक मेखला से विदोहित नेरिटिक ट्यूना के स्तर और शक्यता विषयक लेख प्रस्तुत किया.

डॉ.विजयन, डॉ.जगदीश और डॉ.काजल चक्रबर्ती आस्ट्रेलिया में

डॉ.विजयन, अध्यक्ष, एम बी टी डी, डॉ.जगदीश, वरिष्ठ वैज्ञानिक, टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र और डॉ.काजल चक्रबर्ती, वैज्ञानिक, एम बी टी डी ने आस्ट्रेलिया में 1 से 16 नवंबर 2012 के दौरान मुरिसिडे मोलस्कों से न्यूट्रास्यूटिकल्स विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया.

डॉ.आशा तानज़ानिया में

डॉ.पी.एस.आशा, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ ए ओ) और वेस्टेर्न इंडियन ओशियन मराइन सयन्स असोसिएशन (डब्लियू आइ ओ एम एस ए) द्वारा ज़ान्ज़िबर, तानज़ानिया में 12-16 नवंबर 2012 के दौरान समुद्री ककड़ी मात्स्यिकी-हिंद महा सागर में प्रबंधन के लिए आवास व्यवस्था पर आधारित अभिगम विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया और समुद्री ककड़ी मात्स्यिकी की स्थिति और भारत प्रबंधन विषयक लेख प्रस्तुत किया.

- कृत्रिम भित्ति परियोजना के लिए 23.11.2012 को चेम्मन्चेरी में आयोजित मछुआरा मेले में भाग लिया.

श्री के.मोहम्मद कोया, प्रभारी वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केंद्र ने केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (सी ए इज़ेड आर आइ), जोधपुर, राजस्थान में 16 से 17 नवंबर, 2012 को आयोजित भा कृ अनु प क्षेत्रीय समिति सं. ज्क्ष की ज्र्क्ष्क्ष वीं बैठक में भाग लिया.

डॉ.वीरेन्द्र वीर सिंह, प्रधान वैज्ञानिक ने नई दिल्ली में जी ई एफ इंडिया कन्ट्री पोर्टफोलियो इवालुएशन पर 08.11.2012 को आयोजित अंतिम परामर्श कार्यशाला में भाग लिया और भा कृ अनु प क्षेत्रीय केंद्र, गोवा में 09.11.2012 और 10.11.2012 को आयोजित एन ए आइ पी की 22वीं क्षेत्रीय समिति बैठक में सराहना प्रमाण पत्र प्राप्त किया.

- सी ई एस सी आर ए, नई दिल्ली में m-KRISHI® और m-KRISHI® फिशरीस के बारे में आयोजित बैठक और गंजाम और रायगड जिलाओं में m-KRISHI® फिशरीस कार्यक्रम के लिए रोड मानचित्र का अंतिम रूप देने के संबंध में सी पी आइ और अन्य कार्मिकों के साथ चर्चा और राज्य के उच्च व्यक्तियों के साथ m-KRISHI® सेवा के संबंध में चर्चा 13.12.2012 से 14.12.2012.

डॉ.जो के.किषक्कूडन, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी अधिकारी, कोवलम क्षेत्र प्रयोगशाला

- कृत्रिम भित्ति परियोजना के लिए 21.11.2012 को कडलूर चिन्नकुप्पम में आयोजित मछुआरा मेले में भाग लिया.

डॉ.शोभा जो किषक्कूडन, डॉ.सेथी, डॉ.आर.गीता और **श्रीमती इन्दिरा दिविबाला,** वैज्ञानिक गण

- कृत्रिम भित्ति के संबंध में 07.11.2012 को कडलूर जिला के पिल्लुमेडु और पुतुपुप्पम में और 13 जुलाई 2011 को कडलूर, चिन्नकुप्पम, महाबलिपुरम में आयोजित मछुआरा मेले में भाग लिया.
- आइ डी एल ए एम आंकडा संग्रहण के लिए मत्स्यन गाँवों की पहचान के लिए 07.11.2012 को उप निदेशक और सहायक निदेशक, तमिल नाडु राज्य मात्स्यिकी, कडलूर के साथ चर्चा.

डॉ.के.एस.शोभना, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने डी बी टी, नई दिल्ली में 3-4.12.2012 को आयोजित कार्य दल बैठक में भाग लिया.

डॉ.सी.रामचन्द्रन, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने 22-23 नवंबर को चेन्नई में आयोजित एफ ए ओ/ बी ओ बी पी नैशनल रिसल्ट शेयरिंग एंड स्कोपिंग वर्कशोप ऑन आउटकम्स ऑफ दि एफ आइ एम एस यू एल प्रोजेक्ट में भाग लिया.

डॉ.पी.के.अशोकन, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने बी ई एफ डी ए, गोवा की सहयोगिता से उद्यमियों के लिए दक्षिण गोवा में शंबु पालन पर प्रशिक्षण आयोजित किया.

डॉ.विपिनकुमार वी.पी., वरिष्ठ वैज्ञानिक ने एन ए एस सी समुच्चय, नई दिल्ली में 10-12 अक्तूबर, 2012 के दौरान एशिया और पसफिक में कृषि प्रमुख ट्रान्स-बाउन्डरी रोग प्रबंधन पर विशेष परामर्श पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय बैठक में भाग लिया.

डॉ.श्याम एस.सलिम, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने केरल कृषि विश्वविद्यालय, वेल्लानिक्करा, ट्रिच्चूर के सम्मेलन कक्ष में 14 नवंबर 2012 को आयोजित केरल कृषि विश्वविद्यालय की अकादमी परिषद बैठक में भाग लिया.

- राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंधन अकादमी (एन ए ए आर एम), हैदराबाद में 15-19 अक्तूबर 2012 को आयोजित सप्लाइ चेइन मेनेजमेन्ट इन अग्रिकल्वर विषय पर आयोजित एम डी पी कार्यशाला में भाग लिया.

डॉ.ए.के.अब्दुल नासर ने भारतीय मानक ब्यूरो, मानक भवन, नई दिल्ली में 31 अक्तूबर 2012 को आयोजित मत्स्य, मात्स्यिकी और जलकृषि विभागीय समिति, एफ ए डी 12 में भाग लिया.

डॉ.ग्रिनसन जोर्ज, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने आइ सी आर आइ एस ए टी, पटानचेरु में 02-06 दिसंबर 2012 के दौरान खेत परीक्षण एवं आर एंड आर/क्यू टी एल उपयुक्त करके क्यू टी एल विश्लेषण पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया.

श्री सी.कालिदास ने सी आइ एफ ई, मुम्बई में 15 नवंबर से 5 दिसंबर 2012 के दौरान "प्रवास की अनुसंधान रणनीतियाँ और मात्स्यिकी पर जलवायु परिवर्तन का संघात पर आयोजित सी ए एफ टी प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया."

प्रकाशन

फिल्म डी वी डी:

विपिनकुमार वी.पी., नारायणकुमार आर., श्याम एस.सलिम, सत्यदास आर., मदन एम.एस., रामचन्द्रन सी., स्वातिलक्ष्मी पी.एस. और जोनसन बी. 2012. समुद्री मात्स्यिकी सेक्टर में तटीय ऋणग्रस्तता और माइक्रोफिनान्सः अध्ययन सफलता, केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्ची

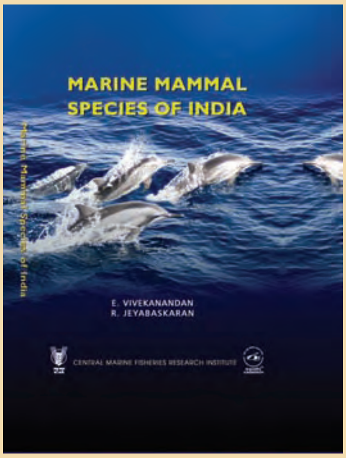

भारत की समुद्री स्तनी जातिया

228 पृष्ठ मूल्य 750/-रु.

झींगों पर हैन्डबुक

125 पृष्ठ मूल्य 600/-रु.

विमोचन किए गए पोस्टर

समुद्री शैवाल और समुद्री घास

50/-रु.

भारत के मृदु प्रवाल और समुद्री फैन

50/-रु.

उप आयुक्त का कारवार के समुद्री पालन खेत में मुआइना

उप आयुत पिंजरे में पालन की गयी एशियन समुद्री बास मछली को लेती हुई

श्रीमती इमकांग्लो ज़मीर, उप आयुक्त, उत्तर कन्नड जिला ने 26 अक्तूबर 2012 को कारवार अनुसंधान केंद्र के समुद्री पालन खेत का मुआइना किया. उप आयुक्त ने खेत में पालन किए जाने वाले अंडशावक सहित विभिन्न प्रकार की मछली जातियों का निरीक्षण किया और समुद्र में इस तरह सफलतापूर्वक पिंजरे का निदर्शन करने के केंद्र के प्रयास की सराहना की.

उप आयुक्त पालन पिंजरे में आहार देने का निरीक्षण करते हुए

डॉ. पोल पांडियन का कारवार में मुआइना

डॉ. पोल पान्डियन, कार्यकारी निदेशक, एन एफ डी बी ने दिनांक 8.6.2012 को कारवार अनुसंधान केंद्र और समुद्री खेत का मुआइना किया.

डॉ. पोल पान्डियन और डॉ. ए.आर.टी. अरशु समुद्री खेत का मुआइना करते हुए

श्री माइकल कार्टर विशाखपट्टणम अनुसंधान केंद्र में

श्री माइकल कार्टर, काउन्सल-कमेर्सियल एंड ट्रेड कमीशनर फोर साउथ इंडिया, आस्ट्रेलियन काउन्सलेट जेनरल, चेन्नई ने 19 अक्तूबर, 2012 को आयोजित बैठक के दौरान केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र का मुआइना किया. उन्होंने डॉ. महेश्वरुडु, प्रभारी वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ क्षेत्रीय केंद्र और आंध्रा प्रदेश की समुद्री मात्स्यिकी के अनुवीक्षण में लगे हुए सभी वैज्ञानिकों के साथ आपसी विनिमय किया.

श्री माइकल कार्टर विशाखपट्टणम मात्स्यिकी पोताश्रय का मुआइना करते हुए

कार्मिक समाचार

नियुक्तियाँ

नाम	पदनाम	केंद्र	प्रभावी तारीख
श्री उपेन्द्र कुमार	सहायक	वेरावल क्षेत्रीय केंद्र	२९.०९.२०१२
कुमारी सुमीना एन.के.	सहायक	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	05.12.2012

अनुकंपा आधार पर नियुक्ति

नाम	पदनाम	केंद्र	प्रभावी तारीख
श्रीमती आर.ईश्वरी	एस एस एस	मद्रास अनुसंधान केंद्र	20.09.2012
श्री राजेश पी.ए.	एस एस एस	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	28.09.2012

पदोन्नतियाँ

नाम व पदनाम	पदोन्नत पद	केंद्र	प्रभावी तारीख
1. डॉ. पी.विजयगोपाल	प्रधान वैज्ञानिक	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	01.01.2009
2. डॉ. गुलशाद मोहम्मद, वरिष्ठ वैज्ञानिक	प्रधान वैज्ञानिक	कालिकट अनुसंधान केंद्र	14.09.2011
3. डॉ. पी.पी. मनोज कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक	प्रधान वैज्ञानिक	कालिकट अनुसंधान केंद्र	21.01.2011
4. श्री ए.वी.जोसफ, वरिष्ठ वित्त एवं लेखा अधिकारी	मुख्य वित्त एवं लेखा अधिकारी	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	27.10.12
5. श्रीमती पी.जे.शीला, सहायक निदेशक (रा भा)	उप निदेशक (रा भा)	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	L20 14-12-2012
6. श्री गंगाधर बी. नाइक, सहायक	सहायक प्रशासनिक अधिकारी	कारवार अनुसंधान केंद्र	10.12.2012
7. श्री सी.के.शिवदास, उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	19.12.2012
8. श्री टोमी प्रिन्स, उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	19.12.2012
9. श्री एम.समुतिरम, उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र	17.12.2012
10. श्रीमती एन.जी.सुप्रिया, उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	कालिकट अनुसंधान केंद्र	21.12.2012
11. श्री आइ.सेयद सादिक, एस एस एस	टी-1(क्षेत्र सहायक)	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	01.12.2012
12. श्री एम.षणमुखवेलु, एस एस एस	टी-1(क्षेत्र सहायक)	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	01.12.2012
13. श्री एम.बरीन मोहम्मद, एस एस एस	टी-1(क्षेत्र सहायक)	मद्रास अनुसंधान केंद्र	15.12.2012

वरीष्ठ अधिकारियों की सेवानिएवृत्ति पर सलामी

श्री जी.अरुमुखम
टी-६ (त अ)
टूटिकोरिन अनु. केंद्र
३०.११.२०१२

श्री एम.एन.केशवन
इलयतु टी-5 (त अ)
सी एम एफ आर आइ मुख्यालय
30.11.2012

श्रीमती पी.टी.मणी
टी-5 (त अ)
सी एम एफ आर आइ मुख्यालय
30.11.2012

श्रीमती के.के.वत्सला
टी-5 (त अ)
सी एम एफ आर आइ मुख्यालय
31.12.2012

श्री जी.श्रीनिवासन
टी-5 (त अ)
मद्रास अनु.केंद्र
31.10.2012

श्री पी.पूवण्णन
टी-5 (त अ)
मद्रास अनु. केंद्र
31.12.2012

श्री एस.ऋषिकेशन
सहा.प्रशा.अधिकारी
विषिंजम अनु. केंद्र
30.11.2012

श्री गंगाधर बी.नाइक
सहा.प्रशा.अधिकारी
कारवार अनु. केंद्र
31.12.2012

ीमती वी.पारुक्कुट्टी
सहायक
सी एम एफ आर आइ मुख्यालय
30.11.2012

श्रीमती चिन्नम्मा आंजलो
एस एस एस
सी एम एफ आर आइ का कृ वि कें
30.11.2012

स्थानांतरण

नाम व पदनाम	से	तक	प्रभावी तारीख
1. श्री फोफान्डी महेन्द्र कुमार, तकनीकी अधिकारी (टी-6)	वेरावल क्षेत्रीय केंद्र	कारवार अनु. केंद्र	25.09.2012
2. श्री एम.आर.वडडेकर, सहा. प्रशा. अधिकारी	वेरावल क्षेत्रीय केंद्र	मुम्बई अनु. केंद्र	01.11.2012
3. श्री डी.अगस्टस जूलिन राज, सहायक	मुम्बई अनु. केंद्र	सी एम एफ आर आइ का कृ वि कें	16.11.2012
4. श्री वी. अशोक महर्षि, टी-3 (तकनीकी सहायक)	टूटिकोरिन अनु. केंद्र	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	15.11.2012

पुनः पदनाम

नाम व पदनाम	के पद पर पुनः पदनाम	केंद्र	प्रभावी तारीख
1. श्री पी.वी.जोर्ज, बेयरर	कैन्टीन अटेन्डन्ट	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	13.12.2012
2. श्री एम.वी.देवस्सी कुट्टी, बेयरर	कैन्टीन अटेन्डन्ट	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	13.12.2012
3. श्री पी.के.पुरुषन, एस एस एस	कैन्टीन अटेन्डन्ट	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	13.12.2012

स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति

नाम	पदनाम	केंद्र	प्रभावी तारीख
1. श्री के.बी.वागमारे	टी-6 (तकनीकी अधिकारी)	मुम्बई अनु. केंद्र	01.11.2012 (पूर्वाह्न)

पदत्याग

नाम	पदनाम	केंद्र	प्रभावी तारीख
1. श्री अलिनकृष्णा	सहायक	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	30.11.2012

नाम में परिवर्तन

नाम व पदनाम	परिवर्तित
1. कुमारी स्वाति प्रियंका सेन, वैज्ञानिक, वेरावल क्षेत्रीय केंद्र	श्रीमती स्वाति प्रियंका सेन दास

पी एच.डी. उपाधि

श्रीमती आशा अगस्टिन, अनुसंधान अध्येता (समुद्री संवर्धन, सी आइ एफ ई, मुम्बई) को "चुनी गयी समुद्री मछलियों में सूक्ष्मजैविक सिंबयोन्टों द्वारा स्टार्च और सेल्लुलोस की उपयोगिता" विषयक अपनी अनुसंधान थिसीस को केंद्रीय मत्स्य शिक्षा विश्वविद्यालय, मुम्बई द्वारा डॉक्टरी उपाधि प्रदान की गयी. उन्होंने डॉ. इमेल्डा जोसफ, वरिष्ठ वैज्ञानिक, समुद्री संवर्धन प्रभाग के मार्गदर्शन में काम किया.

श्री वी. कृष्णन
टी-1 (क्षेत्र सहायक), सी एम एफ आर आइ मुख्यालय
28.11.2012

निधन

हमारा प्रिय सहयोगी श्री वी. कृष्णन के वियोग पर सी एम एफ आर आइ परिवार अत्यंत दुख अदा करते हैं

कडलमीन - IV तीन दशकों से अधिक अनुसंधान कार्यों में सहायता

टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र में ४३.६ का अनुसंधान पोत 'CADALMIN-IV' अनुसंधान कार्यों में सहायता देता रहता है. इस पोत में मछली आनाय एवं चिंगट आनाय और अन्य गिअरों के साथ साथ जी पी एस जैसे आधुनिक बोटिंग एवं सेइलिंग सुविधा, एकोसाउन्डर, वाटर साम्प्लर और वायरलेस सूचना व्यवस्था आदि प्रदान की गयी है. पोत की गति सामान के बिना प्रति घंटा ७ नॉट और सामान सहित गति प्रति घंटा 2.4 से 2.6 नॉट है. जलराशिकी अध्ययनों के लिए पोत का उपयोग किया जाता है. पाक्षिक अवधि के दौरान १० से ३० मीटर की गहराई परास से नमूना संग्रहित किया जाता है. प्राथमिक और द्वितीय उत्पादन के अतिरिक्त लवणता, ऑक्सिजन, तापमान, पी एच, पोषकों जैसे प्राचलों पर अध्ययन किया गया. कडलमीन - IV द्वारा एन आइ सी आर ए परियोजना के लिए आवश्यक मत्स्यन ट्रिप भी नियमित रूप से किए जाते हैं. टूटिकोरिन और पुन्नकायल के उसी मत्स्यन धरातलों जहाँ छोटे एवं मध्यम आकार के वाणिज्यिक आनायक परिचालन करते हैं, में इस पोत द्वारा मत्स्यन परिचालन किया जाता है. सामान्यतः तट से ४ से २५ नॉटिकल मील की दूरी से ६ से २५ मी तक की गहराई परास से दिन में मत्स्यन किया जाता है. एक घंटे की अवधि में पकड की खींच की जाती है. निश्चित अक्षांश और रेखांश के स्थान में मछली जातियों की गहराईवार और महीनेवार प्रचुरता और विविधता पर समझने के लिए मत्स्यन किया जाता है. मछली आनाय द्वारा की गयी पकड में खाद्येतर जीवजातों के अतिरिक्त विभिन्न मछलियाँ, केकड़ा और शीर्षपाद मौजूद थे. प्रति घंटे की औसत पकड परिचालन में २८.५ कि.ग्रा. मछली, २.८ कि.ग्रा. शीर्षपाद, १.४ कि.ग्रा. झींगा और १० कि.ग्रा. खाद्येतर जीवजात प्राप्त हुए. मछलियों में *इनिस्टियस* जातियाँ, *सिनोडस* जाति, *सॉरिडा* जातियाँ, *ट्रकाइनोसेफालस मयोप्स, लियोग्नाथस* जातियाँ, *सिल्लागो सिहामा, सिगानस* जातियाँ, *प्लाटीसेफालस* जातियाँ, *प्लोटोसस इंडिकस, डासिलस ट्राइमाक्युलाटस, लेथ्रिनस* जातियाँ, *सेलेरोइडस लेप्टोलेपिस, उपेनियस* जातियाँ, *पारुपेनिअस* जातियाँ, *स्कोलोप्सिस* जातियाँ, *स्कारस* जातियाँ, *बोथस* जातियाँ, *समारिस* जाति, *हालिकीरस* जाति, *आम्फीप्रियोन* जातियाँ, पफर मछली, बालिस्टिड्स आदि सम्मिलित थी. शीर्षपादों में *सेपिया* जातियाँ, *सेपिएल्ला* जाति, *सेपियोट्यूथिस* जाति, *लोलिगो* जाति, *ओक्टोपस* जाति, केकड़ा जैसे *पोर्टूनस* जातियाँ, *चारिबिडिस नटेटर, कालप्पा* जातियाँ, *माट्यूटा* जाति मौजूद थे. खाद्येतर जीवजातों में समुद्री अर्चिन, तारा मछली और *ओराटोस्क्विल्ला* जाति सम्मिलित थे, लेकिन इन में से एक या दो नमूनों को लेकर बाकी समुद्र में ही वापस छोडे गए. टूटिकोरिन के प्रमुख चिंगट धरातल को इरल मडा कहा जाता है, जो पुन्नकायल के पास है. इस धरातल में चिंगट आनाय उपयुक्त करके *पेनिअस इंडिकस, पी. सेमीसल्केटस, परापेनियोप्सिस माक्सिल्लिपेडो* जातियों के झींगे प्राप्त हुए.

(टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र की रिपोर्ट)

आर वी कडलमीन - IV

कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

कडलमीन, सी एम एफ आर आइ समाचार केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन का तिमाही प्रकाशन है। यह प्रकाशन तिमाही के दौरान संस्थान की प्रमुख कार्यविधियों पर विवरण देने के साथ साथ अनुसंधान क्षेत्र की नई गतिविधियों और सफलताओं पर प्रकाश डालता है और प्रौद्योगिकी जानकारियों को मछुआरा समुदाय तक विकीर्णन करता है।

कडलमीन cadalmin TM